चन्दामामा
मार्च १९७७
1.25 रु

जो भी तुम्हें चाहिए था... सब तुम्हारे
पास है...

एक आलिशान मकान... एयरकंडीशन्ड
कार... फाइव स्टार होटल...

तुमने अपने परिवार को ज़िन्दगी के
सारे ऐशो-आराम दिए हैं...

लेकिन फिर भी तुम उदास क्यों हो, आनन्द?
यही तो सब तुम्हें चाहिए था, ठीक है न?

इन्सान के दिल में उठनेवाले विचारों के
चढ़ाव-उतार का चित्रण यानी
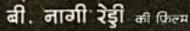
यही है ज़िंदगी

मनुष्य के आंतरिक भावों का सुस्पष्ट निरूपण—
अहम् और परितोष के बीच संघर्ष की कहानी।

दिग्दर्शक : के. एस. सेथूमाधवन संवाद : इन्द्र राज आनन्द
गीत : आनन्द बक्षी संगीत : राजेश रोशन

विजया प्रॉडक्शन्स
की अनूठी फिल्म
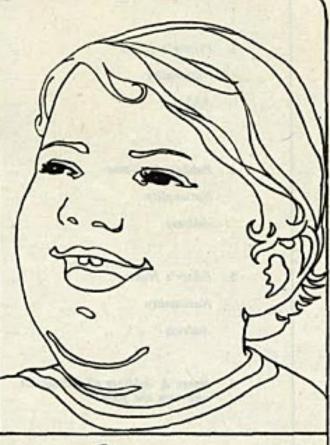
Statement about ownership of CHANDAMAMA (Hindi)

Rule 8 (Form VI), Newspapers (Central) Rules, 1956

1. *Place of Publication*	...	'CHANDAMAMA BUILDINGS' 2 & 3, Arcot Road Vadapalani, Madras-600 026
2. *Periodicity of Publication*	...	MONTHLY 1st of each calendar month
3. *Printer's Name*	...	B. V. REDDI
Nationality	...	INDIAN
Address	...	Prasad Process Pvt Limited 2 & 3, Arcot Road, Vadapalani Madras-600 026
4. *Publisher's Name*	...	B. VISWANATHA REDDI
Nationality	...	INDIAN
Address	...	Chandamama Publications 2 & 3, Arcot Road, Vadapalani Madras-600 026
5. *Editor's Name*	...	NAGI REDDI
Nationality	...	INDIAN
Address	...	'Chandamama Buildings' 2 & 3, Arcot Road, Vadapalani Madras-600 026
6. *Name & Address of individuals who own the paper*	...	CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND Beneficieries:

1. B. V. HARISH
2. B. V. NARESH
3. B. V. L. ARATI
4. B. L. NIRUPAMA
5. B. V. SANJAY
6. B. V. SHARATH
7. B. L. SUNANDA
8. B. N. RAJESH
9. B. ARCHANA
10. B. N. V. VISHNU PRASAD
11. B. L. ARADHANA

All Minors—by Trustee:
M. UTTAMA REDDI, 9/3, V.O.C. Street, Madras 600 024

I, B. Viswanatha Reddi, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

B. VISWANATHA REDDI
Signature of the Publisher

1st March 1977

Chandamama Camel Colour Contest Result No. 6 (HINDI)

1st Prize: Rakesh Kumar, New Delhi *2nd Prize:* Lakshmi, Vishakhapatnam. *3rd Prize:* Siloni Gupta, Ludhiana(Punjab) *4th Prize:* A. Raju, E.C.I.L, Hyderabad. Ravi Kumar. New Delhi. Kirti Sharma, Bekaner (Rajastan) Miss. Shashirekha Mitra, Allahabad. Pardeep Parashar, Delhi. *5th Prize:* Rajiv Bhatti, New Delhi. Sima Kumari Sharma, Delhi Cantt. Shashank. G. Khanolkar, Karnatak. Poresh Vaghela, Bombay. Dinesh Khurana, Jaipur. Devender Tyagi, New Delhi. N. Nageshwar, Allhabad. Sanjay. N. Coil, Bandra, Bombay. M. Anil Kumar, Hyderabad (A.P.) Jagtar Singh "Munde", Punjab.

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने की बेताल कथा "असली रहस्य" है। सभ्यता से युक्त समाज कई मंजिलोंवाले मकान जैसा है। प्रत्येक मंजिल में निवास करनेवाले को ऐसा मालूम होता है कि उसके ऊपर की मंजिलवाले की ज़िदगी अत्यंत आनंददायक है और नीचे की मंजिलवाले की ज़िदगी दुख से भरी हुई है। इसमें कोई असत्य भी मालूम नहीं होता। लेकिन प्रत्येक मंजिल पार करके ऊपर जाने पर व्यक्तियों का भले ही मूल्य बढ़ जाय, मगर व्यक्तियों के बीच का सौहाद्र क्रमशः क्षीण होता जाता है। इस कारण कुछ लोग उन्नति करने के अवकाश को त्याग देते हैं।

वर्ष : २९ मार्च १९७७ अंक : ७

एक प्रति : १-२५ :: वार्षिक चन्दा : १५-००
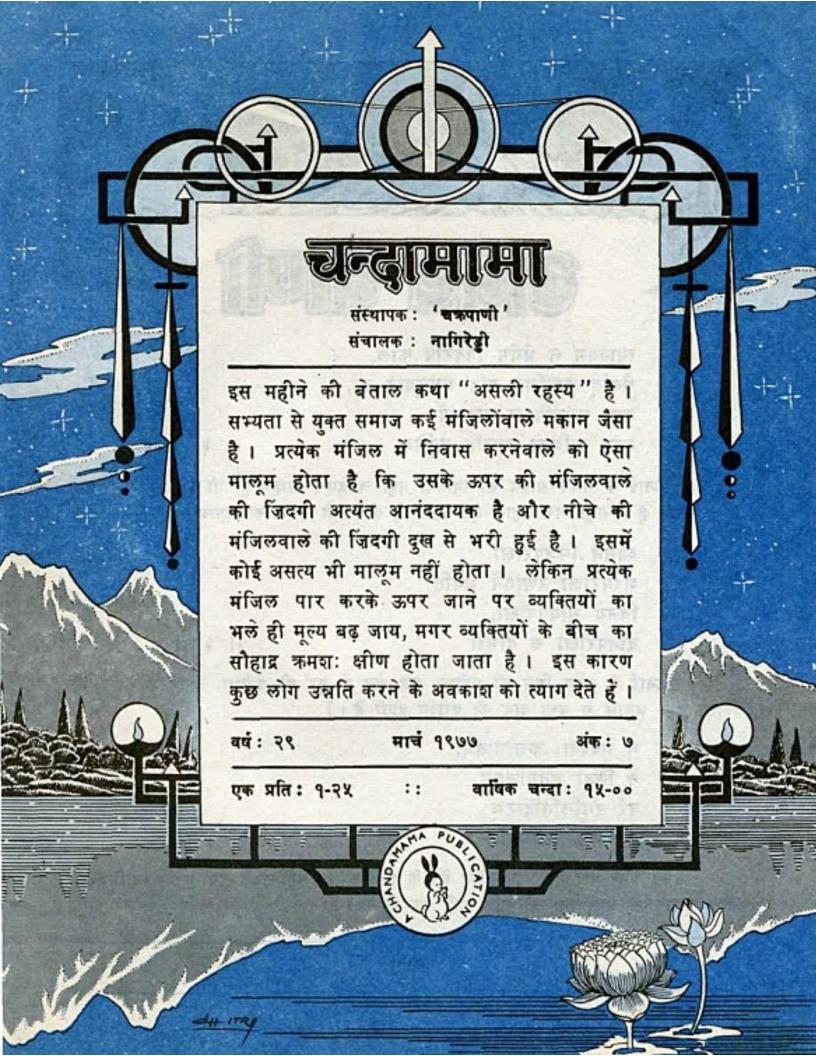
त्याज्यम् न धैर्यम् विदुरेपि काले,
धैर्यात् कदाचित् गति माप्नुयात् सः,
यथा समुद्रेपि च पोतभंगे
साम् यात्रिको वांछति तर्तुमेव ।। १ ।।

[कठिनाई के समय साहस को त्यागना नहीं चाहिए। साहस हो तो कभी बचने का मार्ग मिल सकता है। समुद्र पर जहाज टूट जाता है तो यात्री बचने का उपाय करते हैं।]

व्यसने मित्रपरीक्षा,
शूरपरीक्षा रणांगने भवति,
विनये भृत्यपरीक्षा,
दानपरीक्षा च दुर्भिक्षे ।। २ ।।

[कठिनाई के समय मित्र की परीक्षा, युद्ध क्षेत्र में शूर की परीक्षा, विनय में सेवक की परीक्षा तथा अकाल के वक्त दान की परीक्षा होती है।]

न सदश्वाः कशाघातम्,
न सिंहा घनगर्जितम्,
परै रंगुलिनिर्दिष्टम्
न सहंते मनस्विनः ।। ३ ।।

[अच्छे घोड़े मार नहीं खाते, सिंह मेघ के गर्जन को सह नहीं सकते, इसी प्रकार स्वाभिमानी व्यक्ति दूसरों की आलोचना को सहन नहीं कर सकता।]

प्रमाण

मित्र-संप्राप्ति

[४४]

सरोवर के तट पर चारों मित्र आराम से अपने दिन काट रहे थे। एक दिन की गोष्ठी में चित्रांग (हिरण) हाज़िर न हुआ, इस पर शेष तीनों मित्रों ने परस्पर विचार किया–"चित्रांग को क्या हो गया है? कहीं किसी सिंह ने तो उसे मार न डाला? किसी शिकारी के जाल में तो फँस नहीं गया है न? किसी दावानल में तो फंस न गया?"

आखिर मंथरक (कछुआ) ने कौए से कहा–"उसकी खोज करते जाना मेरे तथा चूहे के लिए संभव नहीं है। इसलिए तुम जंगल के ऊपर उड़ते जाकर चित्रांग की ख़बर लेते आओ। वह कहीं ज़िंदा है या नहीं!"

लघुपतनक (कौआ) उड़कर चला गया। सरोवर के समीप में जाल में फँसे चित्रांग को देख दुखी हो बोला–"दोस्त! यह क्या है?"

अपने मित्र को देखने पर हिरण का दुख फूट पड़ा, वह कौए से बोला–"मेरे जीवन का अंतिम समय निकट आ गया है। आखिरी क्षणों में अपने मित्र के दर्शनों से बढ़कर चाह और क्या हो सकती है? मैंने यदि कभी तुम्हारे दिल को दुखाया हो तो मुझे क्षमा करो! इसी प्रकार मेरी भूलों को क्षमा करने के लिए मेरी तरफ़ से हिरण्यक (चूहा) तथा मंथरक (कछुए) से प्रार्थना करो।"

इस पर कौआ बोला–"दोस्त! मेरे जैसे मित्र के होते तुम दुखी क्यों होते हो? मैं अभी जाकर हिरण्यक को बुला लाता हूँ। वह तुम्हारे जाल के रस्सों को काटकर तुम्हें मुक्त करेगा।"

अंतिम पृष्ठ का चित्र

"मेरा जाल में फंस जाना यही पहली बार नहीं, इसके पूर्व भी एक बार इसी प्रकार फंसकर अंत में छूट गया हूँ।" हिरण ने बताया।

चूहे ने पूछा–"वह कहानी भी तो सुनाओ!" "यह कहानी सुनाने और सुनने का वक़्त नहीं है। शिकारी किसी भी वक़्त आ सकता है! तुम शीघ्र मेरे बंधन काट दो।"

चूहे ने मुस्कुराकर कहा–"मेरे यहाँ रहते तुम्हें शिकारी से डरने की कोई जरूरत नहीं है। मैं थोड़ा-बहुत शास्त्रों का ज्ञान रखता हूँ! तुम भी मुझसे किसी बात में कम नहीं हो! इसीलिए मैंने पूछा।"

कौए ने इस प्रकार हिरण को सांत्वना दी, तब कछुए तथा चूहे के निकट जाकर हिरण की बुरी हालत सुनाई। हिरण्यक को अपनी पीठ पर चढ़ाकर झट से हिरण के पास आ पहुँचा।

अपने मित्रों को देखते ही हिरण की हिम्मत बंध गई, वह बोला–"बुद्धिमान व्यक्ति यदि विपदा में सहायता पाना चाहे तो तुम जैसे मित्रों को प्राप्त करना चाहिए।"

चूहे ने हिरण से पूछा–"ऐसा विवेक रखनेवाले तुम आखिर इस जाल में कैसे फंस गये? सचमुच यह बात हमारे लिए आश्चर्य जनक लगती है।"

"जब प्रारब्ध हमारा पीछा करता है, तब बुद्धिमत्ता काम न देगी! बड़े-बड़े विद्वान भी अपनी ललाट-रेखा को मिटा नहीं सकते!" इन शब्दों के साथ हिरण ने अपना एक अनुभव सुनाया :

बहुत समय पहले की बात है। उस वक़्त मैं छे महीने का बच्चा था। मैं अपने दल के आगे दौड़ा करता था। बड़े-बड़े हिरण तेज़ी से दौड़ते और कहीं कोई रोड़ा आ पड़ता तो उस पर छलांग मारकर भाग जाते थे।

एक दिन मैं अपने दल के साथ चला जा रहा था, हमारे रास्ते में किसी

शिकारी ने एक जाल बिछाया था। बड़े-बड़े हिरण उस पर छलांग मारकर निकल गये, लेकिन मैं छलांग मारना जानता न था। इसलिए मैं दौड़ते जाकर उस जाल में फँस गया।

शिकारी ने प्रसन्न हो मेरे पैरों को बांध दिया। मुझे जाल में फँसे देख बाक़ी हिरण भाग गये।

मगर शिकारी ने मेरा वध नहीं किया, बल्कि उसने सोचा कि मैं ख़ूबसूरत हूँ, इसलिए किसी के हाथ बेचे तो उसे ज्यादा फ़ायदा हो सकता है, शिकारी मुझे अपने घर ले गया। खूब नहलाकर मेरा अलंकार किया और एक राजा के हाथ मुझे बेच दिया।

राजा ने मेरी बड़ी अच्छी देखभाल की, औरतों ने अमित प्यार करके मुझे बहुत सताया।

उन्हीं दिनों में बरसात का मौसम आया। मेघों के गर्जन और बिजली की कड़क सुनते ही मेरा मन जंगल में भागने और अपने लोगों से मिलने को छटपटाने लगा। मैं यह सोचकर रो पड़ा—"म, अपने लोगों के साथ कब दौड़ूंगा जंगल में स्वच्छंदतापूर्वक कब विचारण करूँगा?"

मेरी बातों पर राजा आश्चर्य में अ गया। उसने सोचा कि मुझ पर भूत सवार हो गया है। ओझा को बुला भेजा। वे मुझे लाठियों से पीटने लगे। इसे देख एक साधू ने उन्हें डाँटा—"तुम लोग नाहक़ उसे क्यों सताते हो? उसने आखिर क्या किया है?"

ओझा ने मेरी कही हुई बातें साधू को सुनाईं। इस पर साधू ने कहा—"इस बदक़िस्मत हिरण का अपनी आज़ादी तथा अपने पुराने विहार-स्थलों के वास्ते तड़पने से बढ़कर स्वाभाविकता क्या हो सकती है? तुम लोग इसे मुक्त कर दो।"

फिर क्या था, राजा ने अपने नौकरों द्वारा मुझे खूब नहलवाया, मेरे घावों पर मरहमपट्टी कराकर मुझे मुक्त किया।

१८२. प्रथम ईसाई सम्राट

नीरो जैसे रोमन सम्राट ने ईसाइयों को सिंहों का आहार बनाया तो कानस्टान्टाइन नामक रोमन सम्राट ने रोम साम्राज्य को ईसाई धर्म दिलाया। इनकी मूर्ति पहले रोमन फोरम में रहा करती थी, उसका सिर तथा अन्य खंडित अंग इस चित्र में दर्शित हैं।

माया सरोवर

[१४]
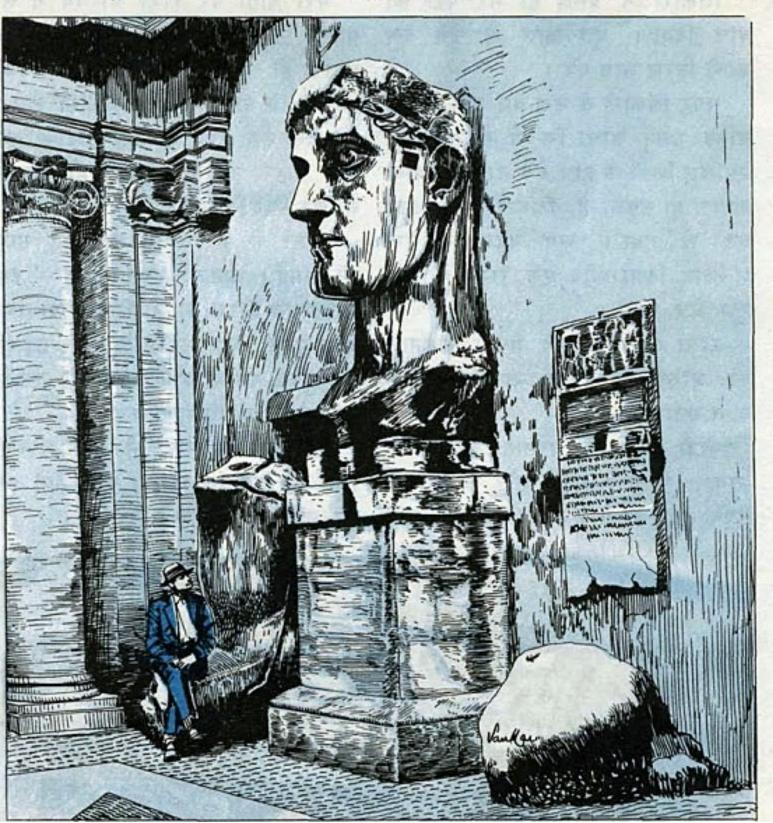
[जलप्रपात से बचकर जयशील तथा सिद्ध साधक ने एक प्राण-भक्षक पेड़ से एक नाटे के प्राण बचाये। उस वक़्त वहाँ पर एक नाटी जाति की रानी आ पहुँची। वह अपने शत्रु का समाचार सुना रही थी, तभी पहाड़ पर से एक भयंकर जानवर ने उनकी ओर एक विशाल चट्टान फेंक दी। बाद–]

जयशील तथा सिद्ध साधक पहाड़ पर स्थित भयंकर जानवर की ओर नहीं बल्कि उसके बाज़ू में खड़े व्यक्ति की ओर विस्मय के साथ देखने लगे। जयशील के मन में यह शंका सताने लगी कि उसने उस व्यक्ति को कहीं देखा है। इस बीच भयंकर जानवर द्वारा फेंकी गई चट्टान उनके बीस-तीस फुट की दूरी पर धम्म से आ गिरी।

नाटी जाति के लोग भय कंपित हो अपने वाहन भेड़ों को हांककर दूर जा खड़े हुए। नाटी रानी भी थोड़ी दूर जाकर जयशील और सिद्ध साधक से बोली– "महावीरो, वह भयंकर नर वानर तथा उसको पालतू बनानेवाला महाकाय व्यक्ति इधर दस-बारह दिनों से हमको खूब सता रहे हैं। जंगल में शिकार खेलनेवाले मेरी जाति के चार लोगों को उस महाकाय ने
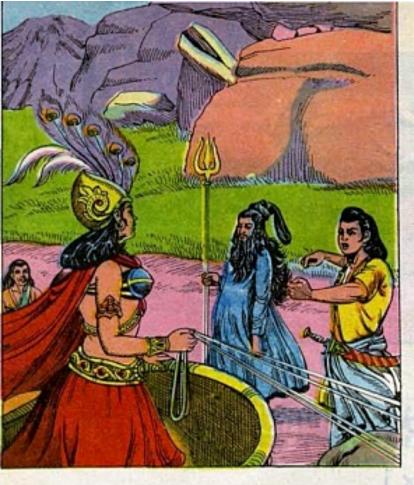
मार डाला है। उनका आसरा पाकर हमारे शत्रु किसी भी क्षण हम पर हमला कर सकते हैं।"

ये बातें सुनने पर जयशील तथा सिद्ध साधक को गढ़वाल की रानी पर बड़ी दया आई। वैसे उस जाति के लोग साहसी मालूम हो रहे थे, लेकिन नर वानर तथा उसके साथ में स्थित मानव को देख वे भयभीत थे।

"जयशील, उस नर वानर के बाजू में तलवार लिये खड़ा हुआ व्यक्ति कहीं हमारे राज्य का तो नहीं है न? थोड़ी सावधानी के साथ देखो तो!" सिद्ध साधक ने कहा।

जयशील के मन में भी यह संदेह हुआ कि नर वानर के साथ रहनेवाला अमुक आदमी होगा, मगर उन लोगों की भांति उस व्यक्ति का इतने सारे जंगल, पहाड़ और नदियों को पार करके यहाँ तक पहुंचना कठिन था...

जयशील यों सोच ही रहा था कि नर वानर के साथ का व्यक्ति वानर को अपनी तलवार के मूठ से चुभोकर कोई आदेश दे रहा था। नर वानर उछलते चला गया और निकट की एक विशाल चट्टान को उठाने का प्रयत्न करने लगा। मगर वह चट्टान इतनी भारी थी कि वह वानर उठा न पा रहा था, फिर भी बराबर वह इस प्रयत्न में लगा हुआ था।

"सिद्ध साधक! लगता है कि वह व्यक्ति फिर से वानर के द्वारा हम पर वह चट्टान फेंकवाना चाहता है। शायद वह मूर्ख यह नहीं जानता कि दिन के वक़्त चट्टान के वार से हम लोगों का बचना बड़ा ही सरल कार्य है।" जयशील ने ये शब्द सिद्ध साधक से कहे, फिर गढ़वाल की रानी की ओर मुड़कर बोला—"आपके अनुचर जंगल में शिकार खेलने के लिए धनुष और बाणों का प्रयोग करते हैं न? आप एक धनुष और बाण तुरंत मंगवा दीजिए।"

गढ़वाल के नाटे लोग साधारणतः भालों से लड़ते हैं। यह उस जाति का नियम है। वे लोग कभी धनुष और बाणों का प्रयोग नहीं करते, मगर इधर कई दिन पहले उस जाति के सेनापति को जंगल में एक स्थान पर एक बड़ा भारी धनुष तथा पाँच-छे बाण मिल गये थे। उसने उन्हें बड़ी सावधानी से छिपा रखा था। यह बात नाटी रानी नहीं जानती थी।

जयशील ने जब धनुष और बाण की बात बताई, तब नाटे सेनापति ने रानी की ओर भयभीत दृष्टि प्रसारित की। वह कुछ कहने को हुआ, पर डर के मारे उसके मुँह से बोल नहीं फूटे। इसे भांपकर सिद्ध साधक बोला—"अजी नाटे योद्धा! बोलने से ही भय खानेवाले तुम युद्ध में सैनिकों और भेड़वाले सवारियों का संचालन कैसे कर सकते हो? डरो मत, जो कहना चाहते हो, कहो न?"

यह सवाल सुनने पर नाटे सेनापति का चेहरा पीला पड़ गया, वह रानी से बोला—"महारानीजी, हमारी जाति का यह नियम है कि हमें धनुष और बाण छूने तक नहीं चाहिए। लेकिन मैंने हमारे इस नियम का उल्लंघन करके जंगल में प्राप्त एक धनुष और पाँच-छे बाणों को अपने घर में छिपा रखा है।"
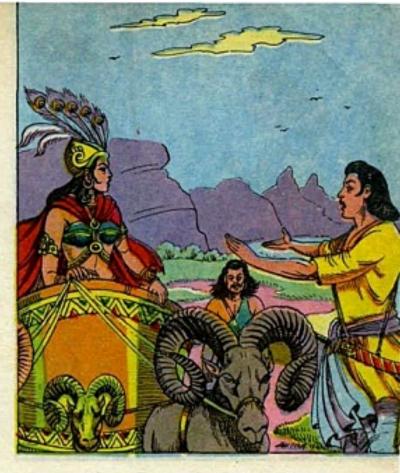
ये बातें सुन नाटी रानी क्रोध में आ गई, वह कुछ कहने ही जा रही थी, तब जयशील ने हाथ उठाकर उसे शांत करते हुए कहा—"रानीजी, तुम्हारे सेनापति ने जो कार्य किया है, वह तुम्हारी जाति की दृष्टि में कैसा भयंकर अपराध है, यह मैं नहीं जानता, लेकिन तुम तत्काल वे धनुष-बाण मंगवा दोगी तो मैं उस नर वानर से फिलहाल तुम लोगों का पिंड छुड़ाऊँगा। इसके बाद मैं अपने धनुष-बाण स्वयं तैयार करके यह उपाय करूँगा कि कैसे उस वानर तथा उसके मालिक का वध किया जाना चाहिए।"
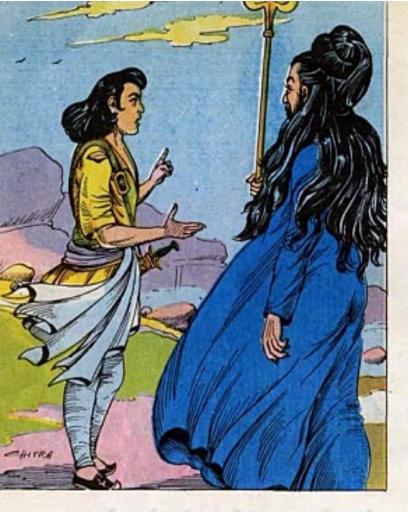
नाटी रानी ने अपने सेनापति की ओर मौन दृष्टि प्रसारित की। दूसरे ही क्षण नाटे सेनापति ने अपने वाहन को ललकारा और तेजी के साथ पेड़ों की ओट में स्थित अपने मकान की ओर चल पड़ा।

इस बीच नर वानर ने एक और चट्टान को उठाकर अपने हाथ में लिया। उसकी कमर से बंधे लोहे की जंजीर को थामनेवाले ने जोर से गर्जन करके तलवार की मूठ से उसकी पीठ पर प्रहार किया। नर वानर चट से मुड़कर उस पर चट्टान का प्रहार करने को हुआ, इस बार उसने तलवार की नोक को वानर के कंठ पर टिकाकर जोर से गर्जन किया।

नर वानर को पालतू बनानेवाले की चिल्लाहट पहाड़ी टीले के नीचे स्थित जयशील तथा उसके साथ रहनेवालों को भी साफ़ सुनाई दी। जयशील ने धीमी आवाज़ में सीटी बजाकर कहा—"सिद्ध साधक! मैं अब समझ पाया कि वह व्यक्ति कौन है? वह तुम्हारे हिरण्यपुर का निवासी नहीं, हमारे अमरावती नगर का निवासी है। मुझे अपनी जन्म भूमि को छोड़ इस प्रकार जंगलों में भटकने का मूल कारण वही है। वह व्यक्ति एक जमाने में हमारे राजा रुद्रसेन के यहाँ अश्वदल का अधिपति था। उसका नाम कृपाणजित है।"

सिद्ध साधक आश्चर्य प्रकट करते हुए बोला—"जयशील! यह कोई अद्भुत बात तो नहीं है? अमरावती नगर कहाँ? और ये भयानक जंगल कहाँ? यह तो शीघ्र बताओ, वास्तव में अब तुम क्या करना चाहते हो?"

जयशील थोड़ी देर तक पहाड़ी टीले की ओर देखता रहा, तब बोला—"सिद्ध साधक, मुझे यह कदापि पसंद नहीं है कि कृपाणजित अपने ऊपर बाण चलानेवाले व्यक्ति को देखे व समझे बिना अपने प्राण त्याग दे! वह उस नर वानर के साथ बराबर एक ही काम करवा रहा है। मुझे

लगता है कि नर वानर निशाना देख चट्टान फेंकना नहीं जानता, उल्टे वह उसी व्यक्ति पर क्रोध के मारे चट्टान का प्रहार करने जा रहा है, जिसने उसे पालतू बनाया।"

इस बीच नाटा सेनापति धनुष-बाण लेकर वहाँ आ पहुँचा, अपने वाहन से उतरकर धनुष और बाण जयशील के चरणों पर रखा। जयशील ने धनुष की जांच की। वह काफ़ी मजबूत था, साथ ही छे तेज बाण भी थे।

सिद्ध साधक ने धनुष और बाणों की ओर दृष्टि दौड़ाकर पूछा—"जयशील, तुम अपने दुश्मन कृपाणजित तथा नर वानर को इन अस्त्रों के द्वारा यम लोक में भेजने जा रहे हो न?"

यह सवाल सुनकर जयशील हँस पड़ा और बोला—"क्या तुम समझते हो कि इतनी दूर से निशाना बांधकर उन दोनों को बाणों के द्वारा मार डालना कोई सरल कार्य है? याद रखो, ये कोई अपूर्व शक्तिवाले ब्रह्मास्त्र या नागास्त्र नहीं, बल्कि साधारण बाण हैं।"

इस बीच पहाड़ी टीले पर कोई हलचल मच गई। अपने को पालतू बनानेवाले पर नर वानर का हमला करना और उसका तलवार की नोक से उसे चुभोते हुए इधर-उधर उछल-कूद करना शुरू हुआ। इतने में चार-पाँच नाटे लोग लंबे रस्से लेकर वहाँ पहुँचे और थोड़ी दूर से ही उन लोगों ने रस्से फेंककर नर वानर के
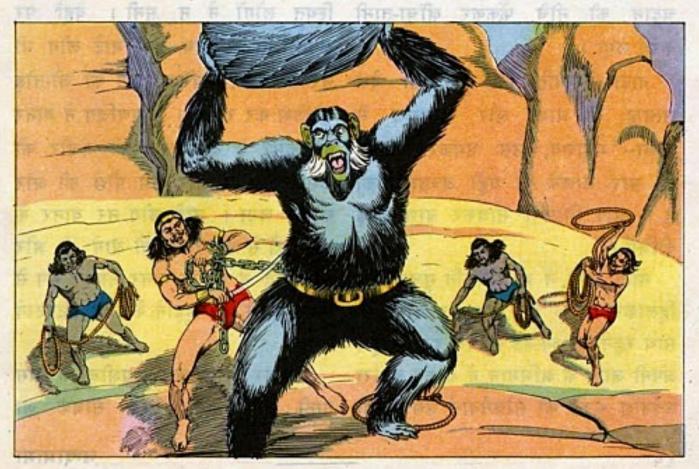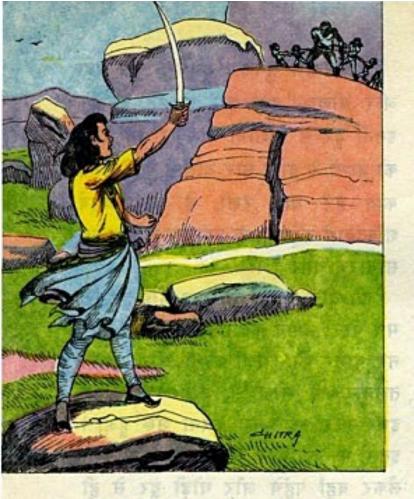
हाथ-पैरों को बांध दिया, पर नर वानर चट्टान को नीचे फेंककर खींचा-तानी करने लगा ।

नाटा सेनापति उस दृश्य को देख उत्साह में आया और जयशील से बोला–"महाशय, उस भयंकर जानवर को मार डालने का यही अच्छा मौक़ा है । आप निशाना साधकर बाण छोड़ दीजिए ।"

नाटी रानी ने भी स्वीकृति सूचक सिर हिलाकर कहा–"हम उस नर वानर के साथ रहनेवाले व्यक्ति को देख डर रहे हैं । अपनी जाति के अभिमान में आकर हमारा सर्वनाश करने की सोचनेवाले उस पहाड़ी दुष्ट तथा उसके अनुचरों का वध हम एक-दो दिन में कर सकते हैं ।"

जयशील ने अनुभव किया कि दूर से पहाड़ी टीले पर स्थित लोगों पर निशाना लगाकर बाण चलाना संभव नहीं है । फिर भी उसने सोचा कि दुश्मन को डराने तथा उसके वहाँ पर पहुँचने की सूचना कृपाणजित को देना युद्ध का क़ायदा कहलाता है, इसलिए वह थोड़ी दूर आगे बढ़ा, एक ऊँची चट्टान पर खड़े हो तलवार निकाली, तब उच्च स्वर में कहा–"अरे नीच, कृपाणजित ! मैं जयशील हूँ, तुम्हारी खबर लेने यहाँ आ पहुँचा हूँ ।"

शायद यह पुकार पहाड़ी टीले पर स्थित लोगों ने न सुनी । वहाँ पर कृपाणजित के साथ अन्य नाटे लोग भी नर वानर पर नियंत्रण रखने की जी-तोड़ कोशिश कर रहे थे । कृपाणजित ने वानर की कमर से बंधी लोहे की जंजीर को कसकर पकड़ा और उसे पीछे की ओर खींचने लगा । नाटे लोग नर वानर के हाथ-पैरों से बंधे रस्सों को आगे की ओर खींच रहे थे । नर वानर भयंकर रूप से गर्जन करते हुए छुड़ाने के लिए छटपटाने लगा ।

तलवार लिए खड़े जयशील के पास नाटी रानी तथा सिद्ध साधक जा

पहुँचे। सिद्ध साधक ने जयशील से कहा–"जयशील, रानी तथा उसके सैनिक अपने दुश्मन का अंत करने के लिए यही अच्छा मौक़ा मान रहे हैं! सुनते हैं कि नर वानर को रस्सों से खींचनेवालों में रानी का प्रमुख शत्रु शंकरसिंह भी है। वहाँ के नाटों में क्या तुम्हें अपने सर पर गीध के पंख बांधनेवाला भी दिखाई दे रहा है?"

जयशील ने पहाड़ी टीले पर स्थित सभी लोगों की ओर इस बार ध्यान से देखा। उनमें सिद्ध साधक के द्वारा बताया गया व्यक्ति भी था। वही शंकरसिंह है! हो सकता है कि वह रानी का शत्रु हो, पर उसका शत्रु तब तक बिलकुल न था। उसका असली शत्रु तो कृपाणजित है! यदि वह बाण चलाना चाहता है तो उसे उसी पर चलाना होगा..."

यों सोचते जयशील ने धनुष-बाण उठाया और सर घुमाकर देखा। निकट में ही अनेक भेड़ सवार तथा उनके पीछे भाले हाथ में लिये हुए नाटे सैनिक पहाड़ पर चढ़ने को तैयार खड़े थे।

जयशील ने नाटी रानी की ओर देखा, तब कहा–"रानीजी! लगता है, तुम्हारे सभी सैनिक युद्ध के लिए सन्नद्ध हैं! मैं एक ही बाण के द्वारा नर वानर और उस महाकाय व्यक्ति का वध नहीं कर सकता। मेरे बाण के छूटते ही तुम्हारे शत्रु सावधान हो जायेंगे! इसलिए सोच

लो कि उनके साथ युद्ध करने के लिए यह अच्छा मौक़ा है या नहीं?"

नाटी रानी ने अपने सेनापति की ओर इस प्रकार देखा, मानो वह उसकी राय जानना चाहती हो! नाटा सेनापति दर्प के साथ भाला लिये अपने वाहन पर सवार हो जयशील से बोला–"महाशय, आप सिर्फ़ उन दुष्टों पर बाण चला लीजिए! आज तक हमारे शत्रु केवल भालों के प्रहार से परिचित हैं, मगर बाण की चोट का अनुभव नहीं रखते। आप के बाण के लगते ही वे लोग भयकंपित हो जायेंगे। इस मौक़े का लाभ उठाकर हम उन पर हमला करेंगे और उन्हें पहाड़ के उस पार भगा देंगे। हो सके तो हम उनकी बस्ती पर हमला करके उसमें आग लगायेंगे।"

"सेनापति! तुम अपने इस उत्साह में यह बात भूल रहे हो कि उनके साथ एक तलवार का योद्धा और नर वानर भी हैं। फिर भी मैं यह देखना चाहता हूँ कि तुम्हारी और तुम्हारे सैनिकों की ताक़त कैसी है?" जयशील ने कहा।

उसी वक़्त सिद्ध साधक ने शूल उठाकर कहा–"जयशील! यही एक अच्छा मौक़ा है! तुम बाण चलाओ! नर वानर ने अपने बंधन तोड़कर एक नाटे को दबोच लिया है!"

जयशील ने बाण का निशाना लगाकर नर वानर पर छोड़ दिया। बाण तेज़ी से जाकर नर वानर की कमर में जा चुभा। दूसरे ही क्षण वह भयंकर रूप से गरज उठा और अपने हाथ में आये हुए एक नाटे को पहाड़ पर से नीचे की ओर फेंक दिया।

नाटा व्यक्ति जान के डर से चिल्लाते हवा में उड़ता आ रहा था, तब नाटे दल के सेनापति ने अपने अनुचरों को सावधान किया। फिर क्या था, भेड़-सवार तथा पैदल सैनिक चिल्लाते भाले उठाकर पहाड़ी टीले की ओर दौड़ पड़े।

(और है)

असली रहस्य

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने पूछा–"राजन, आप जैसे बुद्धिमान का परिस्थितियों का गुलाम बन जाना आश्चर्य जनक-सा लगता है। असभ्य व्यक्ति अपने को प्राप्त अनुपम अवसरों का भी लाभ उठा नहीं पाता है। इसके उदाहरण स्वरूप में तुम्हें वीरदास नामक एक जंगली युवक की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: प्राचीन काल में कामरूप देश पर राजा मलयसेन शासन करता था। उसके कोई संतान न थी। बुढ़ापा निकट आ रहा था। राजा के कोई वारिस न थे, इस कारण उसके राज्य को हस्तगत करने के लिए कई

बेताल कथाएँ

खींचकर उनके साथ भयंकर युद्ध किया। उम्र ढलने की वजह से राजा को एक साथ दोनों से लड़ना संभव न हुआ।

अब राजा की हालत यह हो गई थी कि उसी के अंग रक्षकों के हाथों में मरना निश्चित था, ऐसी हालत में अचानक कहीं से एक जंगली युवक आ धमका। उसने अपने भाले से एक अंगरक्षक का वध किया, दूसरे को राजा के साथ मिलकर मार डाला।

वह युवक एक जंगली नेता का पुत्र था। उसका नाम वीरदास था। वीरदास का पिता लुटेरे दल का नेता था। वीरदास ने राजभक्ति से प्रेरित होकर राजा की रक्षा नहीं की, बल्कि दो जवानों का एक अधेड़ व्यक्ति पर हमला करते देख उसे गुस्सा आया। यह बात मलयसेन जानता न था।

राजा ने वीरदास के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और अपने साथ राजधानी चलने का अनुरोध किया। वीरदास ने भी राजधानी को देखने की जिज्ञासा से राजा के निमंत्रण को स्वीकार किया।

राजमहल में पहुँचने पर मलयसेन ने वीरदास को बताया कि उसकी हत्या के अनेक प्रयत्न हो रहे हैं, मगर यह जानना मुश्किल होता जा रहा है कि ये सारे

लोगों ने प्रयत्न किये। अनेक बार उसकी हत्या करने के प्रयत्न हुए। मगर राजा बार-बार बचता गया। मलयसेन को यह समझना भी मुश्किल हो गया था कि हत्या के ये प्रयत्न कौन कर रहे हैं!

उन्हीं दिनों में मलयसेन को यह समाचार मिला कि पूर्वी जंगलों में एक सफ़ेद बाघ प्रवेश करके यात्रियों की जान ले रहा है। राजा उसका शिकार करने चल पड़ा। जंगल में बड़ी दूर तक खोज की, पर सफ़ेद बाघ का कहीं पता न चला। मगर अचानक राजा के साथ रहनेवाले दो अंग रक्षक तलवार खींचकर उस पर टूट पड़े। राजा ने भी तलवार

प्रयत्न कौन करा रहे हैं। इसके बाद वह वीरदास के साथ खाने बैठा। दो ही कवल मुँह में रख पाया था कि अचानक राजा गिर पड़ा। उसके भोजन में किसी ने जहर मिलाया था।

फिर क्या था, उसी समय राज वैद्य को बुलाया गया। प्रधान मंत्री भी आ पहुँचा। वैद्य के सारे प्रयत्न असफल रहें। मलयसेन ने प्रधान मंत्री को समझाया कि वीरदास ही उसका वारिस है, अतः उसका राज्याभिषेक किया जाय। ये शब्द कहकर राजा ने अपने प्राण त्याग दिये।

चन्द मिनटों में ये जो परिणाम हुए, इन्हें देख वीरदास चकित रह गया। उसे लगा कि तुरंत वहाँ से भाग जाना चाहिए, मगर राजा को ज़हर खिलाने वाले का पता लगाने के ख्याल से वहीं रह गया।

वीरदास के राजा बनते ही उसकी भी हत्या के प्रयत्न हुए, मगर उसकी क़िस्मत अच्छी थी। इसलिए बार-बार वह बचता गया। इन्हीं दिनों में राज्य में लूट-खसोट बढ़ गई। वीरदास जानता था कि लूटनेवाले लोग उसी के दल के हैं, इसलिए उसने लूट-मार की ख़बरों पर कुछ विशेष ध्यान न दिया।

एक दिन सेनापति ने वीरदास के निकट पहुँचकर कहा—"महाराज, लुटेरों
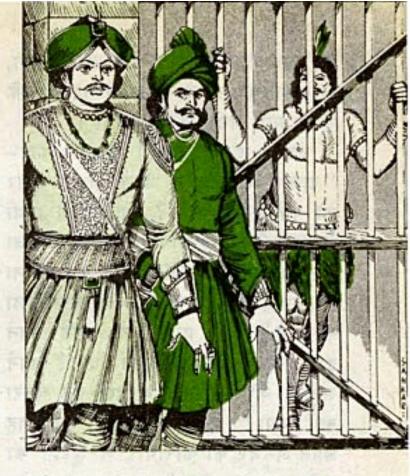
का नेता पकड़ा गया है। आप की आज्ञा हो तो उसे मृत्युदण्ड दे सकता हूँ।"

वीरदास यह सोचकर सेनापति के साथ कारागार में गया कि देखें, उसके चले आने के बाद लुटेरों के दल का नेता कौन बना है? जो व्यक्ति बन्दी बना था, वह वीरदास का प्रधान अनुचर था। वीरदास को देखते ही उसकी आँखें खुशी एवं आशा के साथ चमक उठीं। वह कुछ कहने को हुआ, पर न मालूम क्यों मौन रह गया। वीरदास झट से पीछे मुड़ा और लौट आया।

अपने अनुचर को कारागार में देखने के बाद वीरदास का मन विकल हो उठा।

वह आधी रात के वक़्त कारागार में गया, अपने अनुचर को कारागार से मुक्त करके उसके साथ जंगल में चला गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजन, वीरदास ने अपने राज्याधिकार को क्यों त्याग दिया? क्या अपनी हत्या के डर से? या यह सोचकर कि उसमें राजा बनने की योग्यता नहीं है? वह यह जानना चाहता था कि हत्या का प्रयत्न करनेवाला कौन है? ऐसी हालत में उसने अपने इस प्रयत्न को क्यों त्याग दिया? अपने अनुचर को कारागार में देख वह घबरा क्यों गया? एक राजा के नाते वह अपने अनुचर को कारागार से छुड़ाने का अधिकार रखता है न? इसका उसने उपयोग भी किया है न? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा!"

इस पर विक्रमार्क ने उत्तर दिया—"वीरदास को अपनी हत्या का डर होता तो पहली बार जब उसकी हत्या का प्रयत्न हुआ तभी वह भाग गया होता! मगर उसके मानसिक परिवर्तन का कारण यह कि उसके अनुचर का कारागार में दिखाई देना है। उसे कारागार में बन्दी बनाने की व्यवस्था का मूल पुरुष वही बन गया है। सेनापति ने जिसे बन्दी बनाया है, उसे वह मुक्त कर सकता है, लेकिन वह बाद को राजा के रूप में नहीं रह सकता। सब को यह मालूम हो जाएगा कि वह भी एक लुटेरा है। हत्या के प्रयत्नों का कारण बननेवाले राज-पद के प्रति जब उसके मन में घृणा पैदा हो गई, तब वीरदास के मन में हत्या के प्रयत्न करनेवालों के प्रति जिज्ञासा का न होना स्वाभाविक ही है। इसलिए वीरदास ने आत्मीयता विहीन संस्कार को त्यागकर आत्मीयता प्रधान जंगलीजीवन को मुख्य माना और चला गया।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

शिक्षा का दान

सवेरा हुआ। मुरारी नींद से जागकर आम के नीचे हाथ-मुंह धो रहा था, तभी अधेढ़ उम्र का त्रिलोचन वहाँ पर तेजी से आ पहुँचा, हांफते हुए मुरारी के सामने खड़ा हो गया।

"क्या हुआ काकाजी? घबराये हुए मालूम होते हैं?" मुरारी ने पूछा।

त्रिलोचन अपने माथे पर हाथ रखकर बैठ गया और बोला–"और क्या हुआ? मेरा घर ही डूब गया!"

"क्या चोरी हो गई? आप को किसी ने लूटा है?" मुरारी ने फिर पूछा।

"हाँ, एक तरह से लूट ही है! लूटनेवाला और कोई नहीं, हमारे पड़ोसी बुजुर्ग किशोरी ठाकुर है।" त्रिलोचन ने जवाब दिया।

"आखिर क्या हुआ? ठीक से बताइये तो?" मुरारी ने पूछा।

"मैंने पिछले साल किशोरी ठाकुर से दो सौ रुपये कर्ज लिया। रसीद पर मुझसे अंगूठे का छाप लगवा लिया। मैं पढ़ना-लिखना जानता नहीं हूँ न भाई! इसलिए मैं नहीं जानता था कि उस पर क्या लिखा गया है! वह कहता है कि मैंने दो सौ रुपयों के लिए एक एकड़ ज़मीन गिरवी रखी है। उस ज़मीन पर क़ब्जा करने के लिए कल दुपहर को दो आदमियों को साथ लेकर मेरे घर आया था। गवाहों के हस्ताक्षर भी हैं। गवाह उसी के आदमी हैं।" एक ही घूंट में त्रिलोचन ने कह डाला।

"काकाजी, आप चिंता न कीजिए। अदालत में यह मुक़द्मा ठहर नहीं सकता। लेकिन आप को थोड़ी तक़लीफ़ ज़रूर होगी! एक किशोरी ठाकुर ही क्या, ग्रामवासी अशिक्षित हैं, इसलिए कई लोग

ए. सी. सरकार, जादूगर

उन्हें लूट रहे हैं। धोखा दे रहे हैं। मैं आप की बात देख लूंगा। चिंता न कीजिए!" यों समझाकर मुरारी ने त्रिलोचन को भेज दिया।

मुरारी हाल ही में कानून विद्या पास करके समीप के एक शहर में प्रैक्टीस करता है। छुट्टी के दिनों में वह अपने गाँव कमलपुर आकर अपने माता-पिता के साथ बिता देता है। कमलपुर में अधिकांश लोग किसान हैं और पेशेवर लोग हैं। वे काले अक्षर-भैंस बराबर हैं। शिक्षा के प्रति युवा पीढ़ी के लोग अभिरुचि ज़रूर रखते हैं, मगर फ़ायदा ही क्या रहा? उनमें ज़्यादातर लोग अशिक्षित ही हैं।

मुरारी जानता था कि अशिक्षा के कारण उसके गाँव के लोग कैसे पिछड़े हुए हैं। उसने प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र स्थापित करना चाहा, पर किसी ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई।

गाँव के प्रौढ़ लोगों ने बताया—"यदि हम पर सरस्वती देवी की कृपा होती तो बचपन में ही हम शिक्षा ग्रहण करते। इतनी उम्र के बाद अब पढ़ने से फ़ायदा ही क्या रहा?"

मुरारी इसका कोई उत्तर दे न पाया।

मगर त्रिलोचन के प्रति इस अन्याय को देखने के बाद मुरारी ने प्रौढ़ शिक्षा के प्रति दृढ़ निर्णय लिया। उसने सोचा कि चाहे गाँव का कोई छोटा बच्चा हो

या बूढ़ा, कोई भी अशिक्षित नहीं रह सकता। उसने अपने कार्यक्रम को संपन्न करने के लिए अपनी पत्नी सूमिता को गाँव में ही रखा और गाँव के बुजुर्गों से प्रौढ़ शिक्षा के बारे में चर्चा की, लेकिन सब कोई यह कहते रहें कि सरस्वती देवी का अनुग्रह गाँववालों पर नहीं है। उनके साथ तर्क करना बेकार था। वे अंध विश्वासी थे और अद्भुत कार्यों पर ही विश्वास करते थे।

इसलिए किसी अद्भुत के द्वारा ही ग्रामवासियों में परिवर्तन लाने की मुरारी ने योजना बनाई। इसके वास्ते उसने सुमिता के एक रिश्तेदार की सलाह ली जो एक जादूगर था।

मुरारी ने अपनी योजना के अनुसार सैकड़ों कागज के टुकड़ों पर पक्षी के परवाली क़लम को ताज़ा नींबू के रस में डुबोकर स्पष्ट रूप से "हाँ" लिख दिया और उन कागज़ के टुकड़ों को सुखाया। उनके द्वारा वह गाँववालों को एक अद्भुत प्रदर्शित करके दिखाना चाहता था।

कमलपुर गाँव के निकट एक छोटी-सी नदी बहती थी। गाँववालों का यह विश्वास था कि वह नदी सरस्वती नदी की एक शाखा है और अत्यंत पवित्र नदी है। यह विश्वास मुरारी के लिए बहुत ही अनुकूल साबित हुआ।

मुरारी ने गाँव के सभी बुजुर्गों को बुला भेजा और कहा–"आप लोग हमेशा

कहा करते हैं न कि सरस्वती देवी ने आप को शिक्षा न प्राप्त करने का निर्णय कर लिया है? क्या कभी उस देवी ने आप लोगों को दर्शन देकर अपना यह निर्णय सुनाया है? नहीं, कभी ऐसा नहीं हुआ है। यह केवल आप लोगों का विश्वास मात्र है। मैं कहता हूँ कि यह विश्वास बेमतलब का है! विद्याओं की देवी होकर वे कभी ऐसा न कहेंगी। वे सदा यही चाहती हैं कि छोटे-बड़े, गरीब-अमीर सब कोई उनका अनुग्रह प्राप्त करे। सब कोई शिक्षा प्राप्त करे। लीजिए, ये सफ़ेद कागज़ के टुकड़े हैं। इन पर कुछ लिखा नहीं गया है। आप लोगों में प्रत्येक व्यक्ति कागज का एक एक टुकड़ा लीजिए। इसे पवित्र नदी के जल में डुबोकर देवी से पूछ लीजिए कि वह आप को पढ़ने के लिए कहती हैं या नहीं। वे अपना निर्णय इन कागज़ों पर लिख देंगी।"

मुरारी को ऐसा लगा कि उसके इस निर्णय को अधिकांश ग्रामवासियों ने मान लिया है। प्रौढ़ नर-नारी एक एक करके कागज़ का एक टुकड़ा लेकर मुरारी के साथ नदी के निकट गये, एक के बाद एक उस टुकड़े को पानी में डुबोकर पूछने लगे—क्या हमारा पढ़ना आप की कामना है? थोड़ी ही देर में काग़ज़ के उन टुकड़ों पर "हाँ" शब्द दिखाई दिया।

इसके बाद जब मुरारी ने प्रौढ़शिक्षा का कार्य प्रारंभ किया तब कोई मना न कर पाया। क्योंकि सरस्वती देवी की कामना है कि वे सब शिक्षित बने।

प्रौढ़ जनों को पढ़ाने का दायित्व सुमिता पर आ पड़ा। सप्ताह के अंत में मुरारी घर लौटता और सुमिता की मदद करता था। धीरे-धीरे उसने शहर में स्थित समाज सेवा संघ का सहयोग भी प्राप्त किया। एक वर्ष के अन्दर ही उसका यह कार्यक्रम सफल हो गया। आज कमलपुर में एक भी अशिक्षित नहीं है, इसलिए वह गाँव सरस्वतीपुर नाम से मशहूर हो गया है।

आदमी और पैसा

एक गाँव में श्रीधर नामक एक गुणवान व्यक्ति था। वह बहुत ही गरीब था। बचपन में हीं उसके माता-पिता मर गये, इसलिए वह अनाथ बन गया था। इस पर उसके मामा ने अपने घर आश्रय दिया और उसका पालन-पोषण किया। उसकी मामी ने शुरू में ही श्रीधर की पढ़ाई बंद करवा दी और घर के, काम-काज का भार उसके सर पर डाल दिया।

श्रीधर के मामा के घर सुंदरी नामक एक कन्या थी जो इसी प्रकार दूर के रिश्तेदारों के घर से लाई गई थी। दोनों एक साथ पलने लगे। लोग उस जोड़ी को देख कहा करते थे कि उन दोनों के बीच शादी हो जाय तो क्या ही अच्छा हो! श्रीधर को थोड़ा-सा भी दुख होता तो सुंदरी सहानुभूति दिखाती।

सुंदरी जब युक्त वयस्का हो गई, तब श्रीधर के साथ वह हिल-मिलकर व्यवहार न करती थी, बल्कि उससे दूर हट जाती थी। श्रीधर ने भांप लिया कि सुंदरी घर के बुजुर्गों के डर से कटकर रहती है, पर वह पहले की भांति उससे प्यार करती है। इस कारण सुंदरी के प्रति उसका प्यार बढ़ता ही गया।

एक बार सुंदरी को अकेली देख श्रीधर ने पीछे से दबे पांव जाकर उसकी आँखें बंद कीं। रसोई से निकलनेवाली श्रीधर की मामी ने इस दृश्य को देखा। उसका क्रोध भड़क उठा। उसने अपने पति को बुलाकर समझाया—"देखते हो न, तुम्हारे भानजे की करतूतें! जवान लड़की के साथ ऐसे छेड़-छाड़ करें तो कल कौन उसके साथ शादी करेगा?" इसके बाद मामी ने श्रीधर को खूब खरी-खोटी सुनाईं।

"मामीजी, आप यह क्या कहती हैं? कोई उसके साथ शादी क्यों करेगा? मैं ही करूंगा।" श्रीधर ने कहा।

"क्यों नहीं करोगे, बेटा? खूब-खा-पीकर मोटे बन गये तो भले-बुरे का भी तुम्हें ख्याल न रहा। इस बार तुम उस लड़की का स्पर्श करो, तो तुम्हारे हाथ-पैर तोड़कर घर से बाहर निकाल दूंगी।" यों कहते सुंदरी को खींच ले गई।

श्रीधर ने अपने मामा से पूछा—"क्यों मामा, आप का भी यही निर्णय है?"

"अबे, सुनो! तुमने सुंदरी की बात उठाई, तो मैं तुम्हारी हड्डी-पसली तोड़ दूंगा। तुम्हें खाने को नहीं, उल्टे शादी करना चाहते हो? तुम मेरे यहाँ शरण लिये हुए हो, उसे क्या खिलाओगे? खाक!" मामा ने डांटकर कहा।

श्रीधर ने अपने मामा को अनेक प्रकार से समझाना चाहा। बताया कि मानवता प्रधान है, धन नहीं, तिस पर भी वह सुंदरी के साथ प्यार करता है!

"अबे प्यार करने मात्र से घर-द्वार और खाना मिल जाता है? मानवता मुट्ठी भर चावल न देगी! मेरी नज़र में धन प्रधान है, इसके बाद ही ये सारी चीज़ें आती हैं!" मामा ने स्पष्ट कहा।

श्रीधर का पौरुष जाग उठा—"मामाजी, मैं अपना ख़ून-पसीना एक करके ही सही धन कमाऊँगा और सुंदरी को अपनी बनाऊँगा। यदि मैं धन कमा नहीं पाया तो इस ज़िंदगी भर में मैं आप को अपना चेहरा नहीं दिखाऊँगा। लेकिन आप मुझे सिर्फ़ एक साल की मोहलत दीजिए, इस बीच सुंदरी की शादी न कीजिएगा।"

मामा ने मजाक़ में ही मन में सोचा कि श्रीधर का लाखों रुपये कमाना और सुंदरी के साथ शादी करना होने की नहीं!

घर छोड़ने के बाद श्रीधर को मालूम हुआ कि धन कमाना कितना कठिन है। जो भी कमावे, खाने में खर्च हो जाता

है। ऐसी हालत में धन कैसे बचावे? धीरे धीरे श्रीधर के मन में ज़िंदगी के प्रति विरक्ति की भावना पैदा होने लगी। मानवता और अच्छाई पर से उसका विश्वास जाता रहा।

एक दिन रात को श्रीधर किसी के घर के बाहर चबूतरे पर लेटा हुआ था, तब दो नक़ाबधारी चोर किसी के घर को लूटकर चोरी के माल को गठरी में बांधे उधर से गुजरते दिखाई दिये।

श्रीधर झट उठ बैठा और उनका रास्ता रोककर खड़ा हो गया। चोरों में से एक ने पूछा–"अबे, क्या तू जीना नहीं चाहता?"

गुस्से में आकर श्रीधर ने जोर से उसके गाल पर तमाचा मारा। चोर नीचे गिर पड़ा और कराहने लगा। इसे देख दूसरा चोर डर के मारे कांप उठा।

"साफ़-साफ़ बता दो, यह धन तुम्हें कहाँ से मिला? तुम लोग क्यों इस तरह निकृष्ट जीवन बिता रहे हो?" श्रीधर ने चोरों से पूछा।

इस पर दूसरे चोर ने समझाया–"यह तुम क्या कहते हो, बाबू? कोई भी व्यक्ति सचाई व ईमानदारी के साथ धन कहीं कमा सकता है? यह बात तुम धनियों से पूछोगे तो वे जवाब क्या दे सकते हैं? तुम आइंदा यह सवाल मत पूछो, यह गलत है। यह पूछना चाहिए कि तुम्हारे पास कितना धन है? पर यह नहीं पूछना चाहिए कि यह धन तुम्हें कैसे मिला? जो धन कमा सकते हैं, उनके सामने धन न कमा सकनेवालों को निकृष्ट जीवन ही बिताना पड़ता है! आख़िर धर्मपत्नी भी यही कहती है कि धन कमाकर लाओ, लेकिन यह नहीं कहती कि अमुक तरीक़े से कमा लाओ! लगता है कि धन के बारे में तुम कुछ नहीं जानते! धन के सामने अच्छाई, मानवता भी सिकुड़ जाती हैं।"

श्रीधर ने थोड़ी देर तक सोचकर कहा–"धन मुझे भी चाहिए। थोड़ा-बहुत

धन के ढेरों को चोरों के गुप्त केन्द्र में पहुँचवा दिया। वह चोर के रूप में ज़रूर बदला था, पर उसमें मानवता बनी रही। उसने अपने अनुचरों को कुछ नियमों का पालन करने के लिए कठिन आदेश दिया।

एक बार श्रीधर के मन में सुंदरी को देखने की इच्छा हुई। उसन अपने चार प्रमुख अनुचरों को साथ में लिया, बुजुर्गों के वेष धरकर सुंदरी के गाँव पहुँचे। उन्हें मालूम हुआ कि उसी दिन रात को सुंदरी की शादी होने जा रही है।

क़रीब आधी रात के वक़्त मुहूर्त था। सुंदरी का मकान रिश्तेदारों से खचाखच भरा हुआ था। श्रीधर दूल्हे के रूप में तथा उसके पिता को भी वहाँ देख चकित रह गया। वे दोनों पक्के चोर थे। उन्हें इसके पूर्व श्रीधर ने एक विवाह मण्डप में एक दूल्हा तथा दूल्हे के पिता के रूप में देखा था, जिसे लूटने के लिए श्रीधर अपने दल के साथ गया था। उसका मामा आज धन के लोभ में पड़कर सुंदरी को एक गड्ढे में गिराने जा रहा है।

श्रीधर ने उसी वक़्त अपने कर्तव्य का निर्णय किया और अपने अनुचरों को आदेश दिया कि उन्हें क्या क्या करना चाहिए।

नहीं, लाखों रुपये चाहिए। क्या मुझे भी तुम लोग अपने दल में मिला लोगे?"

चोर ने हँसते हुए कहा–"हमारे दल में जितने भी लोग शामिल हो जाये, फिर भी जगह खाली रहती है। खाली का न होने में यह कोई नौकरी थोड़े ही बाबू! तुम जैसे हिम्मतवर हमारे साथ मिल जाता है तो हमें चाहिए ही क्या? मौक़ा मिले तो हम लाखों नहीं, करोड़ों रुपये कमा सकते हैं! चलो!"

इस प्रकार श्रीधर चोर के रूप में बदल गया। अपने साहस के कारण वह चोरों का नेता बना। धनवानों को लूटकर

विवाह के रस्म शुरू हुए। मंत्रोच्छारण और गाजे-बाजों की ध्वनि से सारा घर गूंज उठा। वधू को मकान के पिछवाड़े के कमरे में रखा गया था। उसके निकट कोई औरत थी। इतने में श्रीधर का एक अनुचर आकर उस औरत से बोला– "सुनिये बहनजी, आप को कोई बुला रहे हैं।" सुंदरी को अकेली पाकर दूसरे ने उससे कहा–"बहन, श्रीधर आये हुए हैं। तुम से दो-चार मिनट बात करना चाहते हैं, आ जाओ।" यों कहकर घर के पिछवाड़े में ले गया।

इस बीच पुरोहित चिल्ला उठा– "दुलहिन को ले आइए।" मगर दुलहिन का कहीं पता न था। दुलहिन को न पाकर वहाँ पर कोलाहल प्रारंभ हुआ। लोग दुलहिन की खोज में इधर-उधर भागने लगे। इतने में मुहूर्त टल गया। सब लोग थके-मांदे थे, इसलिए शिथिल हो सो गये।

श्रीधर ने पहले ही अनुमान लगाया था कि दूल्हा और उसका पिता क्या करनेवाले हैं। सवेरे जब वे लोग बारात को लूटकर भाग रहे थे, तब अपने अनुचरों के साथ उनका सामना किया। चोरी के माल के साथ उन दोनों को बंदी बनाया और अपने मामा के घर ले आया। उसी वक़्त श्रीधर का एक अनुचर सुंदरी को वहाँ पर ले आया।

"मामा, तुमने मुझसे भी बढ़कर योग्य वर को चुन लिया है न?" श्रीधर ने ताना मारा।

"बेटा, मेरी अक़्ल ठिकाने लग गई है। तुम समय पर न पहुँचते तो अकारण मेरी बेटी की ज़िंदगी बरबाद हो जाती।" श्रीधर के मामा ने कहा।

विवाह के जो प्रयत्न किये थे, वे बेकार न जाये, तथा विवाह में आये हुए रिश्तेदार भी निराश न हो, इस विचार से मामा ने सुंदरी का विवाह श्रीधर के साथ किया। उस दिन से श्रीधर ने चोरी करना छोड़ दिया और सुंदरी के साथ अपने मामा के घर आराम से रहने लगा।
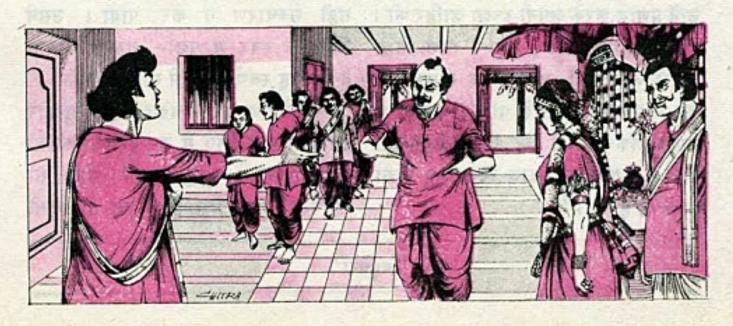
स्वर्ण विद्या

सीताराम और माधो एक साधारण परिवार के व्यक्ति थे। उनके मन में स्वर्ण विद्या प्राप्त करने की बड़ी इच्छा थी। उनकी आँखों में जो भी साधू या बैरागी पड़ जाता, उससे झट पूछ लेते थे–"क्या आप स्वर्ण विद्या जानते हैं?"

एक बार इसी सवाल के जवाब में एक बैरागी ने कहा–"यह विद्या तो मेरे गुरुजी जानते हैं। वे इस गाँव के बाहर पहाड़ों में रहा करते हैं।" फिर वे दोनों तुरंत बैरागी को साथ ले गुरु के पास पहुँचे और उन्हें प्रणाम करके अपनी इच्छा ज़ाहिर की।

गुरु ने मुस्कुराकर कहा–"स्वर्ण विद्या तो मैं जानता हूँ, लेकिन गुरु दक्षिणा के रूप में प्रत्येक व्यक्ति से पाँच-पाँच सोने के सिक्के लेकर ही मैं वह विद्या दे सकता हूँ। गुरु दक्षिणा चुकाये बिना वह विद्या सफल न होगी।"

इसके बाद सीताराम और माधो ने कई रुपये खर्च करके पाँच-पाँच सोने के सिक्के खरीदे और गुरु के पास पहुँचे। गुरु ने सोने के सिक्के लेकर उन्हें एक कठिन श्लोक सुनाया–"मैं तुम लोगों को एक मंत्र सुनाता हूँ, उसे कंठाग्र कर लो। कागज़ पर लिखने से उसका प्रभाव जाता रहेगा।" इन शब्दों के साथ उन्हें गुरु ने एक कठिन श्लोक सुनाया।

सीताराम ने बड़ी आसानी से वह श्लोक कंठस्थ किया, मगर माधो उसका सही उच्चारण न कर पाया। उसने चिंता के स्वर में पूछा–"गुरुदेव, लगता है कि यह स्वर्ण विद्या मैं सीख न पाऊँगा।"

गुरु ने पल भर सोचकर कहा–"तुम्हारे इस दुर्भाग्य के लिए मैं कर ही क्या सकता हूँ? लेकिन मैं तुम्हारी एक छोटी सी सहायता कर सकता हूँ। अब तो किसी

भी हालत में सीताराम के मंत्र के प्रभाव की परीक्षा लेनी है। उस परीक्षा के द्वारा जो सोना प्राप्त होगा, तुम उसे ले लो।"

इसके बाद गुरु ने सीताराम से कहा–"आज शुक्ला नवमी है। फिर तुम्हें अगली शुक्ला नवमी के दिन ही सोना तैयार करना होगा। याने महीने में एक बार! यह भी केवल एक बार! अगर तुम इन नियमों का पालन न करोगे तो तुम्हें यह मंत्र बिलकुल काम न देगा।"

इसके बाद गुरु एक मिट्टी का मटका ले आया। उसमें बालू भरकर उस पर पत्त ढक दिये। तब सीताराम को आँखें बंद करके मंत्र-पठन करने का आदेश दिया। सीताराम ने मंत्र-पठन समाप्त करके मटके पर के पत्ते हटा दिये। आश्चर्य की बात थी कि मटके में बालू की जगह चमकनेवाले सोने के सिक्के थे!

इसके बाद गुरु ने वह मटका माधो को दिया। उसमें सोना देखकर माधो की आँखें चमक उठीं। उसने सोचा कि उस सोने के द्वारा उसकी सारी जिंदगी आराम से कट जाएगी।

इसके थोड़ी देर बाद गुरु ने उन दोनों शिष्यों को लक्ष्य करके कहा–"बेटे! मैं यहां पर ज्यादा दिन नहीं रह सकता। तुम्हें कोई संदेह हो तो इस गुफा में आ जाओ। तुम्हारे संदेहों के निवारण का मैं उचित प्रबंध करूँगा। अब तुम जा सकते हो।"

गुरु से विदा लेकर सीताराम और माधो खुशी के साथ अपने अपने घर चले गये। माधो ने अपने मटके पर कपड़ा बांधकर उसे गुप्त रूप से अपने पिछवाड़े में गाड़ दिया।

उधर सीताराम अगली शुक्ला नवमी का बड़ी उत्सुकता के साथ इंतज़ार करने लगा। नवमी के दिन उसने एक बड़ी भारी हांडी में बालू भर दिया। उस पर खूब पत्ते बिछाये। श्रद्धापूर्वक अपनी आँखें बंदकर मंत्र-पठन किया।

थोड़ी देर बाद पत्ते हटाकर देखा तो बालू मात्र था। हांडी को औंधा करके ढूंढ़ा, पर बालू में रत्ती भर भी सोना न मिला। इस पर सीताराम माधो के घर की तरफ़ बेतहाशा दौड़ पड़ा।

सारी बातें सुनकर माधो ने कहा–"तुमने गलत ढंग से मंत्र-पठन किया होगा। ठीक से इस मंत्र का उच्छारण करना कठिन है।"

सीताराम ने उसे बताया कि वह सही ढंग से मंत्रोच्छारण कर सकता है।

"सीताराम, तुम्हें तो अधिक लोभ में पड़ना नहीं चाहिए था। क्या तुम्हें भी एक मटके भर सोना पर्याप्त न था? कोई बात नहीं, चिंता न करो। मैं एक मटके भर सोना लेकर क्या करूंगा? तुम भी आधा ले लो।" माधो ने समझाया।

इसके बाद माधो ने अपने मटके को निकालकर देखा। उसके सिक्के अब चमक नहीं रहे थे। उन सिक्कों को ले जाकर दोनों मित्रों ने सुनार को दिखाया।

सोनार ने सिक्कों की जांच करके कहा–"यह सोना कैसे हो सकता है? एक सोने के सिक्के की क़ीमत से इस तरह के दस सिक्के तैयार किये जा सकते हैं।"

इस पर दोनों मित्रों ने इस धोखाधड़ी का रहस्य जानना चाहा। वे दोनों पहाड़ी गुफा की ओर दौड़ पड़े। वहां पर कोई न था, लेकिन एक चिट्ठी पड़ी हुई थी जिस पर एक पत्थर रखा हुआ था। चिट्ठी में यों लिखा हुआ था:

"बेटे! मंत्रों के द्वारा कोई भी चीज़ सोना नहीं बन सकती। बिना मेहनत किये किसी को कभी सोना नहीं मिल सकता। मगर बिना मेहनत किये सोना बनाने का एक ही उपाय है! जो बुद्धिमान है, वह दूसरों की बेवकूफ़ी को सोने के रूप में बदल सकता है। यह स्वर्ण विद्या मैं जानता था। तुम लोग सोना बनाने के लिए अपने से भी गये बीते बेवकूफ़ों को ढूंढ लो। मैं तुम लोगों को यही एक अच्छी सलाह दे सकता हूं।"

इत्र का सौदागर

एक गाँव में अमीर और हुसन नामक दो दोस्त थे। अमीर अव्वल दर्जे का सुस्त था, साथ ही वह हमेशा किसी न किसी मुसीबत में फँस जाता और परेशान रहता, ऐसी हालत में हुसन जाकर किसी न किसी उपाय से उसे बचा लेता था।

दोनों दोस्तों ने सोचा कि कोई व्यापार करके पर्याप्त धन कमा ले और तब जाकर शादी कर ले। वे दोनों किसी भी काम में अच्छी योग्यता नहीं रखते थे, इस कारण कोई उन्हें काम भी दे न सकता था। व्यापार करना हो तो थोड़ी-बहुत पूंजी की जरूरत थी। इसलिए दोनों ने अपने अपने पुराने मकान बेच डाले, उस धन से तरह-तरह के इत्र खरीदें। इत्र की शीशियों को चमड़े के बक्सों में सजाकर दोनों उन्हें बेचने निकल पड़े।

अमीर पूरब की दिशा में चल पड़ा। वह दिन भर जंगली रास्ते से सफ़र करता रहा और संध्या तक जंगल के एक छोर पर पहुँच गया। उसे लगा कि उसका बदन और कपड़े पसीने से भीग गये हैं और उनसे बदबू आ रही है। इत्र के सौदागर को चाहिए कि दूर से ही उसकी देह से इत्र की गंध आवे। उसके बदले उसके बदन से पसीने की बदबू का निकलना किसी प्रकार से व्यापार का धर्म नहीं कहलाता।

इसलिए अमीर एक बरगद के नीचे बैठ गया। चमड़े का बक्सा खोल इत्र की एक शीशी बाहर निकाली, उसमें रूई का टुकड़ा डुबोकर अपने कपड़ों पर इत्र मलने लगा।

उसी वक़्त बरगद की जटाएँ झूल उठीं। एक बड़ी औरत की आकृति

रामचन्द्र उपाध्याय

अमीर के सामने प्रत्यक्ष हुई, उसने पूछा–"तुम यह क्या कर रहे हो?"

अमीर ने सोचा कि यह कोई पिशाचिनी है, उसने गुस्से में आकर कहा–"देखती नहीं हो, मैं इत्र लगा रहा हूँ?"

"मेरे भी बदन पर मल दो न?" पिशाचिनी ने पूछा।

"तुम्हें किसी के हाथ इत्र मलने की क्या जरूरत है? छोटे आकार में तुम शीशी के भीतर घुस जाओ और अपने बदन को भिगोकर ऊपर आ जाओ।" अमीर ने समझाया।

पिशाचिनी लघु रूप में जब शीशी के भीतर घुस गई, तब अमीर ने शीशी में काग लगा दिया। शीशी को चमड़े के बक्स में बंद करके वहाँ से चल पड़ा। अंधेरे के फैलते-फैलते वह एक गाँव में जा पहुँचा।

रात उसी गाँव में बिताकर उसने एक उपाय सोचा। अपनी इन शीशियों को कई गाँव घूमते बेचते जावें तो ये कब तक समाप्त होनेवाली हैं! सुनते हैं कि दो दिनों का सफ़र करने पर राजधानी में पहुँच सकते हैं। यह भी सुनते हैं कि राजकुमारी की शादी होने जा रही है। अपना सारा माल अगर राजा को भेंट कर दे तो राजा के द्वारा जो कुछ इनाम मिलेगा, वह भी बड़ी भारी रक़म हो सकती है!

यों सोचकर अमीर सीधे राजधानी पहुँचा। राजा के दर्शन करने के लिए राजमहल पहुँचकर खबर भिजवा दी कि दूर देश से इत्र का सौदागार आया हुआ है। उसे जल्द ही राजा के दर्शन मिल गये। उसने इत्र की सारी शीशियों को राजा के सामने रखा और निवेदन किया कि राजकुमारी के विवाह के अवसर पर भेंट के रूप में ये शीशियाँ समर्पित करना चाहता है।

राजा ने राजकुमारी को बुलवाकर इत्र को देखने की सलाह दी। राजकुमारी ने

एक शीशी का काग निकालकर उसकी गंध देखी और पागल की तरह उछल-कूद करते चिल्ला उठी–"हाय! हाय! मेरी शादी है! चालीस साल बाद मेरी शादी है!"

राजा ने भांप लिया कि जो राजकुमारी थोड़ी देर पहले बिलकुल स्वस्थ थी, उसके इस व्यवहार का कारण अमीर ही है, अपने सिपाहियों को आदेश दिया–"इस दुष्ट को कारागार में भेज दो।"

कारागार में रहते वक़्त असली बात अमीर की समझ में आ गई। वह यह कि राजकुमारी ने उस शीशी का काग खोल दिया था, जिसमें पिशाचिनी घुस गई थी। पिशाचिनी ने बाहर निकलकर संभवतः राजकुमारी के शरीर के भीतर प्रवेश कर लिया है। कहीं जंगल में रहनेवाली पिशाचिनी को रनिवास प्राप्त हो गया है, तो वह राजकुमारी को छोड़नेवाली नहीं है।

इस उपाय के सूझने पर उसने राजा के पास खबर भिजवा दी–"मैं राजकुमारी को स्वस्थ बनाने का उपाय बताऊंगा।"

राजा ने सिपाहियों को आदेश दे अमीर को राजमहल में बुलवा भेजा और पूछा–"बताओ, तुम कैसा उपाय करना चाहते हो?"

"महाराज, राजकुमारीजी में एक पिशाचिनी ने प्रवेश कर लिया है। मैंने उसे अपनी इत्र की शीशी में बंद कर रखा था। दुर्भाग्य से राजकुमारी ने उसी शीशी को खोल दिया है। इसलिए आप राजकुमारी का विवाह मेरे साथ कर दे तो मैं पिशाचिनी को जंगली जीवन ही बढ़िया साबित करा दूंगा। तब वह राजकुमारी को छोड़ भाग जाएगी, वरना जब तक उसे राजमहल के सुख प्राप्त होते रहेंगे तब तक वह राजकुमारी को छोड़ेगी नहीं।" अमीर ने कहा।

ये बातें सुन राजा क्रोध में आ गया, तब तक राजा को इत्र के सौदागर का

आशय मालूम न था, अब साफ़ प्रकट हो गया। उसने राजकुमारी के साथ शादी करने का षड़यंत्र रचकर ही यह करतूत की है। राजा ने गरजते हुए सिपाहियों को आदेश दिया–"अमावास्या के दिन इसको फांसी पर चढ़वा दो।"

अमावास्या निकट थी। अमीर ने सिपाहियों से गिड़गिड़ाकर अपने दोस्त हुसन को इस बात की खबर भिजवा दी। खबर के मिलते ही हुसन आ धमका। उसने सारी समस्या को सही ढंग से समझ लिया।

हुसन सीधे राजमहल में पहुँचा और राजकुमारी के शरीर से पिशाचिनी को भगाने का आश्वासन दिया।

राजा ने उसका मज़ाक़ करते हुए पूछा–"इसके बदले में तुम राजकुमारी के साथ शादी करने की शर्त रखोगे न?"

"नहीं, लेकिन मेरी शर्त यह होगी कि मैं राजकुमारी के समक्ष जो भी बोलूंगा, उसे रोकना नहीं चाहिए। पहले मुझे एक आदम कद के शीशे का जार काग सहित दिलवा दीजिए।" हुसन ने कहा।

राजा ने ऐसा ही किया।

हुसन उसे राजकुमारी के निकट उठवाकर ले गया और बोला–"राजकुमारी को इस जार में रखकर काग बंद कीजिए।"

इसके दूसरे ही क्षण राजकुमारी चीखकर नीचे गिर पड़ी। पिशाचिनी यह सोचकर डर के मारे राजकुमारी को छोड़ भाग गई कि वरना उसे फिर से बंधन में रहना पड़ेगा।

राजकुमारी जब होश में आई, तब वह पहले की भांति पूर्ण स्वस्थ थी।

राजा की खुशी की सीमा न थी। उसने हुसन को बहुत बड़ा पुरस्कार ही नहीं दिया, बल्कि उसके निवेदन पर अमीर को भी कारागार से मुक्तकर उसे भी छोटा-सा पुरस्कार दिया।

इसके बाद दोनों मित्र अपने गाँव लौटे। शादी करके आराम से अपने दिन बिताने लगे।

उल्टा फल

रामशास्त्री के जब बहुत समय तक कोई संतान न हुई, तब उसने गिरिनाथ नामक लड़के को दत्त-पुत्र बनाया। इसके थोड़े समय बाद रामशास्त्री के एक लड़का हुआ। अब रामशास्त्री ने अपने पालतू पुत्र को घर के काम-काज करने में लगाया। उसे पढ़ाया-लिखाया नहीं, मगर अपने निजी पुत्र को महान पंडित बनाया।

गिरिनाथ ने चित्र कला का अच्छा अभ्यास किया।

एक बार जमीन्दार ने अपनी वर्षगांठ पर कलाकारों, कवियों तथा पंडितों का सम्मान करने की घोषणा की। रामशास्त्री अपने निजी पुत्र को साथ ले वहाँ पहुँचा। जमींदार ने सभी कलाकारों की जांच की और उन्हें दूसरे दिन पुरस्कार देने का आश्वासन दे उनके संकेतों के रूप में कोई चीज़ दे दी। रामशास्त्री के निजी पुत्र को नीले रंग का फूल और गिरिनाथ को लाल रंग के फूल मिले। लाल फूल केवल गिरिनाथ को प्राप्त था, उल्टे वह फूला न समा रहा था, इसे देख रामशास्त्री ईर्ष्या से भर उठा। उसने दूसरे दिन सवेरे अपने पुत्र के हाथ लाल फूल तथा गिरिनाथ के हाथ नीले रंग का फूल देकर भेजा।

लाल फूल को देखते ही मंत्री ने रामशास्त्री के निजी पुत्र को कोड़े लगवाये और नीला फूल लानेवाले गिरिनाथ को सोने के सिक्के दिये, क्योंकि अशिक्षित गिरिनाथ ने जमींदार के निकट असभ्यतापूर्ण व्यवहार किया था।

धोखे की सजा

एक गांव में सोमसुंदर नामक एक धनी आदमी था। वह धन जोड़ता गया, मगर उसके साथ ही उसके मन में और धन जोड़ने का उसका लोभ भी बढ़ता गया। उसने आसानी से धन कमाने का एक उपाय किया।

एक दिन सोमसुंदर राह चलनेवाले एक भिखारी को पकड़ लाया, उसे अपना उपाय बताकर बोला—"तुम जो भी अपनी मेहनत या युक्ति के द्वारा कमा लाओगे, उसमें से आधा तुम्हें दूंगा। क्या तुम मेरे यहां दो दिन रह सकोगे?"

भिखारी भूख के मारे एकदम परेशान था। इसलिए उसने झट से सोमसुंदर की बात मान ली।

उस दिन रात को सोमसुंदर अचानक जोर से चिल्ला उठा—"चोर! चोर! मुझे बचाइए!"

सोमसुंदर की चिल्लाहट सुनकर अड़ोस-पड़ोस के लोग भाले व कटार लेकर उसके घर तक आ पहुंचे।

इस बीच सोमसुंदर ने पिछवाड़े के किवाड़ खोल दिये और सब को दिखला दिया कि चोर इसी रास्ते से भाग गये हैं। लोगों ने बड़ी देर तक चोरों को इधर-उधर खोजा-ढूंढ़ा। आखिर चोरों के कहीं दिखाई न देने पर निराश हो अपने अपने घर लौटे।

इधर यह शोरगुल मचा हुआ था, उधर की हालत यह थी कि सोमसुंदर के आश्रय में रहनेवाला भिखारी युवक अड़ोस-पड़ोस के घरों के भीतर घुसकर उनके बर्तन-भांड़े एक बोरे में भरकर सोमसुंदर के घर उठा लाया।

सोमसुंदर ने जल्दी-जल्दी अपने घर के किवाड़ भीतर से बंद किये, बोरा खोलकर

विमला गार्गव

देखा। उसमें कई बर्तन और अन्य चीज़ों को देख वह बड़ा खुश हुआ, भिखारी की तारीफ़ करते हुए पूछा–"तुम जब ये चीज़ें उठा ला रहे थे, तब किसी ने तुम्हें नहीं देखा?"

सोमसुंदर की तारीफ़ से भिखारी युवक फूला न समाया और बोला–"सब लोग आप की चिल्लाहट सुनकर आप के घर की तरफ़ दौड़े-दौड़े आ पहुँचे। सभी पड़ोसियों के किवाड़ खुले हुए थे। उनके पिछवाड़ों में जो भी चीज़ें मिलीं, उठा ले आया। अब आप मेरा हिस्सा मुझे दिलवा दीजिए।"

"मैं तुम्हारा हिस्सा दूँ तो तुम कहाँ छिपाओगे? दो दिन बाद मैं तुम्हें तुम्हारा पूरा हिस्सा दे दूँगा।" यों समझाकर उसे बाहर भेजा, तब एक कोने में स्थित भूगर्भगृह में उन सारी चीज़ों को इतमीनान के साथ छिपा रखा। युवक के जेब-खर्च के लिए दो रुपये देकर वह फिर से जा लेटा।

दूसरे दिन आधी रात को सोमसुंदर फिर से "चोर, चोर!" चिल्लाने लगा। सोमसुंदर के इस कुतंत्र से अपरिचित पड़ोसी लोग उसके घर फिर दौड़े आये। उन लोगों के आते देख सोमसुंदर अपनी आँखें बंद करके "चोर चोर" चिल्लाते कांपने लगा।

लेटे ही लेटे कांपनेवाले सोमसुंदर को किसी ने थपकी देकर जगाया। सोमसुंदर ने चौंककर अपने को जगानेवाले को जोर से कसकर पकड़ लिया और चिल्ला उठा–"चोर! चोर!"

लोगों ने सोचा कि बेचारा सोमसुंदर कल की चोरी की घटना से हिम्मत हार बैठा है। इसलिए उसे ढ़ाढ़सं बंधाकर बोले–"कल रात को हमारे घरों में भी चोरी हो गई है। कल से गाँव के चारों तरफ़ पहरा बिठायेंगे। अब तुम को डरने की कोई जरूरत नहीं।"

पड़ोसियों के जाने के बाद भिखारी युवक ने वहाँ पहुँचकर सोमसुंदर से पूछा–

"मालिकजी! आप के कहे अनुसार अब दो दिन बीत गये हैं। मेरा हिस्सा मुझे दे दीजिए।"

"कल मैं शहर में ये चीजें बेचकर उस धन में से तुम्हारा जो हिस्सा बनेगा, उसे दे दूँगा।" यों सोमसुंदर ने भिखारी युवक को समझाया।

दूसरे दिन सोमसुंदर ने शहर में चोरी का माल अच्छे दाम पर बेचा और घर लौट आया।

भिखारी युवक बीच रास्ते में सोमसुंदर से आ मिला। उसके साथ घर लौटकर अपना हिस्सा माँगा।

सोमसुंदर ने उसकी ओर आश्चर्य के साथ देखा और गरज कर कहा—"मैं नहीं जानता कि तुम कौन हो? मेरे घर से तुम निकल जाओ। चाहे तो तुम फ़रियाद कर लो।"

उस युवक ने सोचा था कि सोमसुंदर जो भी पैसे दे, ले ले! इसी विचार से लौटा था, पर उसने देखा कि उसी वक़्त सोमसुंदर शहर से लाये हुए अपने रुपये पूजागृह में मूर्ति के नीचे के दराज में छिपा रहा था।

उस युवक ने निश्चय कर लिया कि उस धन को किसी भी हालत में हड़प लेना चाहिए। उस दिन रात को जब वह एक पेड़ के नीचे लेटा हुआ था, तब उसे कहीं से काना-फूसी सुनाई दी। वे लोग वास्तव में चोर थे, युवक ने उनके पास जाकर सोमसुंदर का सारा किस्सा उन्हें सुनाया और बताया कि वे लोग सोमसुंदर के घर से जो भी चुरा लायेंगे उसमें उसे भी थोड़ा हिस्सा दे।

चोरों ने उसकी शर्त मान ली। सोमसुंदर के घर पहुँचकर उसे रस्सों से बांध दिया। सोमसुंदर "चोर, चोर!" चिल्लाने लगा।

लोगों ने सोचा कि सोमसुंदर बड़बड़ा रहा है, इसलिए कोई मदद के लिए न आया। चोरों ने सोमसुंदर का घर लूटा और उस युवक को थोड़ा हिस्सा दिया।
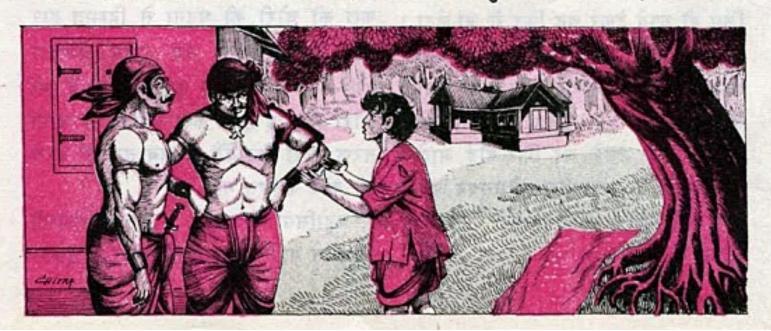
गाज की करामात

रत्नगिरि के राजा रत्नपाल ने एक बार वनभोज का प्रबंध किया। भोजन के वक्त राजा ने अपने विदूषक को अपने पास ही बिठा लिया। सैकड़ों लोगों को खाना परोसा जा रहा था। सब लोगों के पत्तलों में लड्डू परोसे गये। भूल से विदूषक के पत्तल में लड्डू परोसा नहीं गया।

विदूषक ने सहसा राजा की ओर मुड़कर कहा—"इस वक्त अचानक आंधी-वर्षा के साथ आप सब पर गाज गिरे तो क्या ही अच्छा होगा!" इस पर राजा ने हँसकर कहा—"अगर हम सब पर गाज गिरे तो क्या तुम पर नहीं गिरेगा?"

"यह कैसे हो सकता है, महाराज? आप सब के पत्तलों में गिरनेवाला लड्डू क्या मेरे पत्तल में गिरा है?" विदूषक ने उल्टा सवाल किया।

राजा हँस पड़ा। रसोइये को बुलवाकर विदूषक के पत्तल में दो-चार लड्डू परोसवा दिये।

मानवता
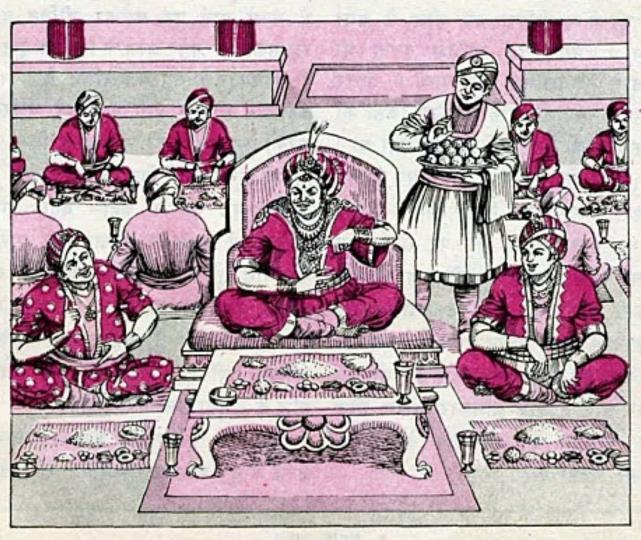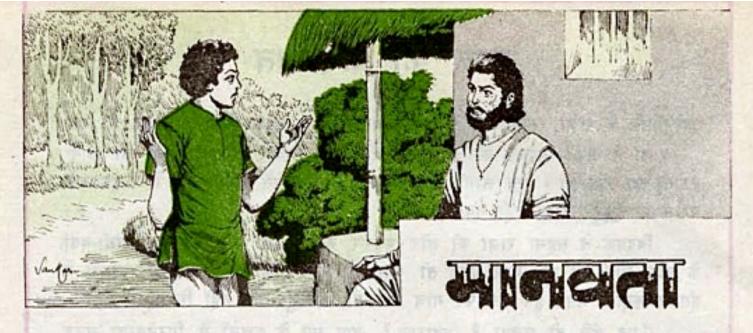
सारंग नामक युवक ने समस्त शास्त्रों का अभ्यास किया। शिक्षा की समाप्ति के पश्चात अपने देश की राजधानी मणिपुर में आजीविका की खोज में चला आया। मगर वह कोशिश करके भी दरबार में प्रवेश नहीं कर पाया। भीतर प्रवेश करना भी चाहे तो उसे किसी की सिफ़ारिश की ज़रूरत थी या घूस देना था। इन दोनों के अभाव में वहाँ पर शिक्षा, संस्कार और पांडित्य किसी काम के न थे।

यह बात मालूम होने पर सारंग का क्रोध भड़क उठा। उसके तथा उसकी नौकरी के बीच रोड़ा बननेवाले लोग वास्तव में उसके सामने तुच्छ हैं। लेकिन इस बात को कौन समझ पाता है? योग्यता अलग चीज़ है और अधिकार अलग चीज़ है। योग्यता को अधिकार के सामने झुकना पड़ता है!

इस अनुभव के बाद सारंग अपने गुरु की सेवा में पहुँचा, अपना अनुभव सुनाकर बोला–"गुरुदेव! ऐसा मालूम होता है कि मैं अच्छे मार्ग पर चलकर जीवित नहीं रह सकता। मगर आज के दिनों में दुष्टता ही अधिकार के रूप में प्रचलित है। इस कारण मैं भी बुरे मार्ग पर याने चोरियाँ करके, लूट-खसोट करके, ज़रूरत पड़ने पर हत्याएं करके अपने दिन बिताऊँगा।"

इस पर गुरु ने कहा–"बेटा, तुमने इसके लिए आवश्यक शिक्षा नहीं पाई। मेरे पास तुमने जो शिक्षा प्राप्त की, वह तुम्हारे हृदय-विकास और मानवता का बोध करानेवाली है, वह दुष्टता के लिए अनुकूल नहीं है। फिर भी तुम अपनी बुद्धि के अनुसार चलकर देखो!"

सारंग ने सोचा कि कोई भी मानव अच्छे व बुरे काम परिस्थितियों के प्रभाव

संतोष नारंग

के कारण ही करता है, इसका शिक्षा और मानसिक विकास के साथ कोई संबंध नहीं है। यही सोचकर सारंग ने चोरी करके दिन काटने का निश्चय किया और मणिपुर को लौट आया।

एक दिन आधी रात के वक़्त सारंग ने एक घर में चोरी करने का निश्चय करके उसके पिछवाड़े में प्रवेश किया। पिछवाड़े के कमरे से रोशनी फूट रही थी। सारंग कमरे के निकट पहुँचा और छिपकर कमरे में होनेवाली बातचीत सुनी।

उस घर का मालिक अपनी पत्नी से कह रहा था-"आखिर हमारे सभी कर्जदारों ने समय पर हमारा धन लौटा दिया। दस हज़ार स्वर्णमुद्राएँ हाथ लगीं। अब बेटी का विवाह संपन्न हो जाएगा।" इसके बाद घर के मालिक का स्वर्णमुद्राओंवाली थैली को अपनी पत्नी के हाथ देना और उस औरत का उस थैली को पेटी में सुरक्षित रखना, यह सब सारंग ने देखा। सारंग को लगा कि ऐसे धन की चोरी करना महान पाप है। धन की चोरी करनी ही है तो ऐसे धनियों के घर करनी है, जिनके पास आवश्यकता से बहुत ही ज्यादा पालतू धन होता है। इस प्रकार ज़रूरत के लिए वसूल किये गये धन को लूटना ठीक नहीं है।

इसके बाद सारंग ने चोरी करने के अपने विचार को बदल लिया और दूर

चला गया। उसी वक़्त उसने देखा कि एक दूसरा व्यक्ति पिछवाड़े की दीवार लांघकर भीतर प्रवेश कर रहा है।

संभवत: वह व्यक्ति चोर होगा। यह सोचकर सारंग एक झाड़ी के पीछे छुप गया।

घर के लोग जब तक दीपक बुझाकर सोये नहीं, तब तक चोर छिपा ही रह गया। इसके बाद उसने कमरे में सेंध लगाकर भीतर प्रवेश किया।

सारंग ने खिड़की में से देखा, चोर ने कमरे में प्रवेश करके पेटी से स्वर्णमुद्राओं की थैली हड़प ली और सेंध से होकर बाहर निकल रहा है, तब सारंग सेंध के पास गया। सेंध में से बाहर निकलनेवाले चोर को पकड़कर चिल्ला उठा–"चोर! चोर पकड़ा गया।"

घर के लोग यह चिल्लाहट सुनकर जाग उठे। अड़ोस-पड़ोस के लोगों ने जागकर चोर को पकड़ लिया और राजा के सिपाहियों के हाथ सौंप दिया। चोर की सुनवाई के समय राजा ने सारंग को बुला भेजा और उसकी गवाही माँगी। सारंग ने राजा से निवेदन किया–"राजन, मैंने कई शास्त्रों का अध्ययन किया है। नौकरी की खोज में चला जा रहा था। एक घर में चोर को घुसते देखा, मुझे संदेह हुआ, मैंने उसका पीछा किया और जब यह चोरी करके लौट रहा था, तब मैंने उसे पकड़ लिया है।

राजा ने सारंग के साहस की बड़ी प्रशंसा की और उसे बढ़िया पुरस्कार देने के साथ उसकी योग्यताओं के अनुरूप दरबार में एक अच्छी नौकरी भी दी।

इसके बाद सारंग ने अपने गुरु के दर्शन करके कहा–"गुरुदेव! आप का कहना बिलकुल सच है। मैं चोरी नहीं कर पाया और न कर सकता हूँ। लेकिन इसके साथ मेरा कहना भी सच है कि मेरी दुष्टता ने भले ही मुझे आजीविका का रास्ता न दिखाया हो, मगर एक दूसरे की दुष्टता ने मुझे आजीविका का मार्ग दिखाया है।"
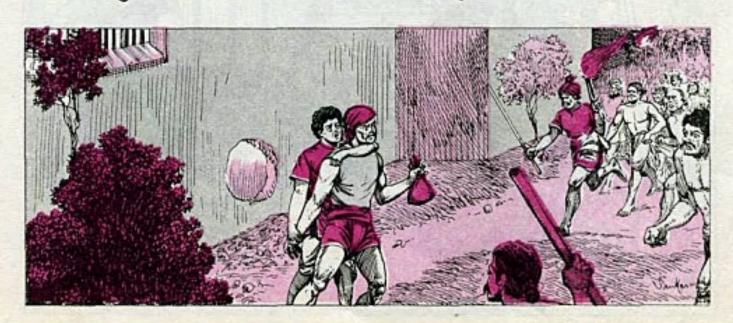
सूझ-बूझ

एक महा पंडित ने राजा कृष्णदेवराय के सामने अपने पांडित्य का प्रदर्शन करके एक हज़ार स्वर्ण मुद्राएँ पुरस्कार के रूप में प्राप्त कीं। वह एक सराय में जा ठहरा। सराय के कई लोगों को न मालूम कैसे पता चला कि ये सज्जन महान पंडित हैं और राजा ने इन्हें एक हज़ार मुद्राओं का पुरस्कार दिया है।

रात को पंडित ने अपना बिस्तर बिछा लिया। थोड़ी देर बाद एक आदमी ने आकर पंडित के बाज़ू में अपना बिस्तर बिछा लिया। वह एक चोर था।

आधी रात के समय जब सभी लोग गहरी नींद सो रहे थे तब उस चोर ने पंडित के सिरहाने की थैली को हड़प लिया और उसे खोलकर देखा। थैली में स्वर्ण मुद्राएँ न थीं। उसने पंडित के बिस्तर को टटोलकर देखा, पर कहीं स्वर्ण मुद्राएँ न मिलीं।

इस विचार से वह धूर्त रात भर जागता रहा कि इस बात का पता लगा ले कि पंडितजी ने आख़िर ये स्वर्ण मुद्राएँ कहाँ पर छिपा रखी हैं। सवेरा होते ही पंडित जाग उठा। चोर के तकिये के नीचे से स्वर्ण मुद्राओं की अपनी थैली निकालकर अपने रास्ते चला गया।
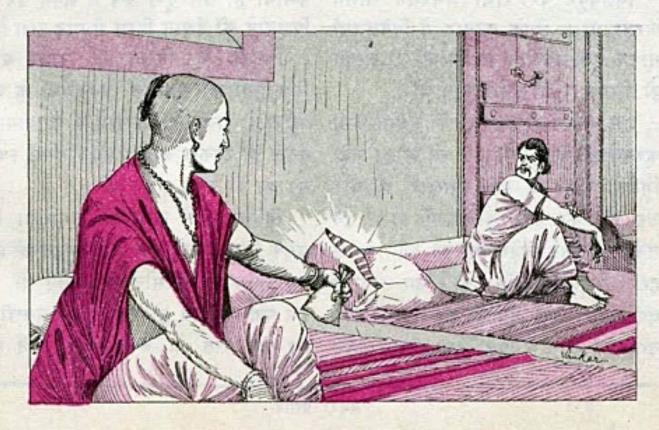
धर्म देवता

एक बार पार्वती के मन में यह इच्छा पैदा हुई कि भूलोक में धर्मदेवता नीतिवान तथा सच्चरित्रों की कैसी रक्षा करता है, जान ले। पार्वती की इच्छा की पूर्ति करने के विचार से शिवजी ने उन्हें विजयपुर राज्य में भेजा।

विजयपुर पर राजा अमरसेन शासन करता था। उसके दरबार में विवेकवर्मा नामक एक उच्च अधिकारी था जो अत्यंत ही ईमानदार और नीतिवान था।

इस कारण विवेकवर्मा के अधीन काम करनेवालों को धन लूटने का मौक़ा नहीं मिलता था। वे सब घूसखोर थे और उस दल का नेता सुरेन्द्रवर्मा था। उन सबने मिलकर विवेकवर्मा को अपने पद से हटाने का एक षड़यंत्र रचा। उन लोगों ने एक हज़ार स्वर्ण मुद्राओं का संग्रह किया, उन्हें एक बर्तन में डाल दिया। उस बर्तन को ले जाकर विवेकवर्मा के पिछवाड़े में गाड़कर रख दिया।

इसके बाद उन लोगों ने राजा के नाम एक जाली चिट्ठी भेज दी जिसमें लिखा था कि विवेकवर्मा बहुत बड़ा घूसख़ोर है, उसने अनुचित मार्गों द्वारा जो धन कमाया है, उसे गुप्त रूप से अपने घर के पिछवाड़े की ईशान दिशा में गाड़ रखा है।

चिट्ठी के मिलते ही राजा थोड़े सिपाहियों को साथ ले विवेकवर्मा के घर पहुँचा। राजा ने पिछवाड़े में खुदवाया। बर्तन तो निकल आया, मगर उसमें स्वर्ण मुद्राओं की जगह कंकड़ भरे हुए थे।

विवेकवर्मा ने राजा को समझाया कि उसके किसी विरोधी ने यह करतूत की है। उस बर्तन में जो सोने की मुद्राएँ थीं, वे इस प्रकार गायब हो गईं थीं। घूसखोरों का दल रात के वक़्त जब सोने की

मथुरा प्रसाद

मुद्राओंवाला बर्तन विवेकवर्मा के घर ले जा रहा था, तब इसे एक चोर ने भांप लिया और उनका अनुकरण किया। उसने देखा कि उस दल ने कहाँ पर छिपा रखा है, फिर उस दल के चले जाने पर बर्तन को खोद निकाला, उसमें कंकड़ भरकर फिर से उसे उसी जगह गाड़ दिया और अपने रास्ते चल गया।

इस प्रकार पार्वती ने देखा कि धर्म देवता ने विवेकवर्मा की कैसे रक्षा की।

अपने कुतंत्र के विफल हुए देख सुरेन्द्रवर्मा और उसके अनुचर न केवल निराश हुए बल्कि अपने धन के हाथ से निकल जाने पर दुखी भी हो गये। लेकिन वे चुप न रहें, विवेकवर्मा को बदनाम करने के लिए उन लोगों ने एक दूसरा षड़यंत्र रचा।

इसके बाद सुरेन्द्रवर्मा ने एक दिन रात को विवेकवर्मा के घर अपने दो अनुचरों तथा हीरे-जवाहरात धारण की हुई एक नारी को भी भेजा। वे विवेकवर्मा के घर पहुँचकर बोले—"महाशय, हम यात्री हैं। सराय में ठहरे हैं। हमारे पास काफी धन, हीरे व जवाहरात हैं। सराय में चोर-डाकू हो सकते हैं। आज रात के लिए आप हमारे धन व गहने अपने घर सुरक्षित रखिए, कल सुबह अपने देश को लौटते समय लेते जायेंगे।"

विवेकवर्मा ने उन यात्रियों के धन व गहने लेकर अपने घर सुरक्षित रख लिया।
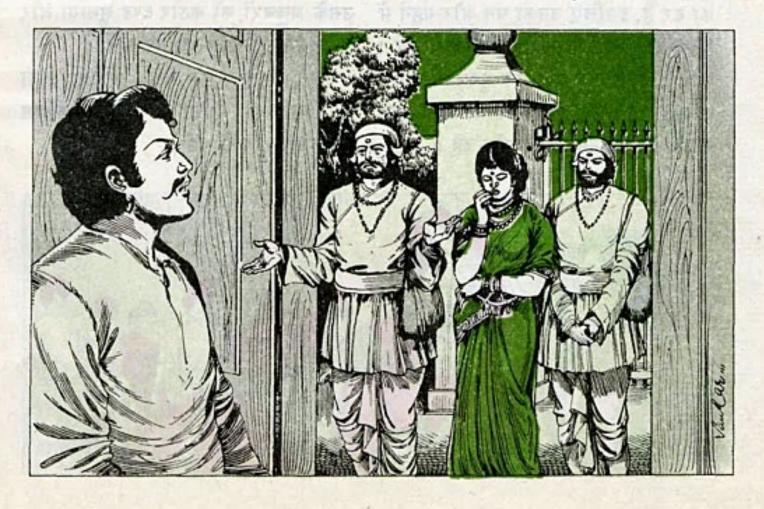
इसके बाद राजा के नाम एक और जाली चिट्ठी पहुँची। उसमें लिखा हुआ था–विवेकवर्मा घूसखोर है। उसने एक व्यक्ति से काफी धन और गहने घूस के रूप में लिया है। उसके घर की तलाशी ली जाय तो वे सब बरामद हो सकते हैं।

उसी रात को राजा अपने सिपाहियों के साथ विवेकवर्मा के घर पहुँचा, घर की पूरी तलाशी ली गई। लेकिन भारी मात्रा में धन या गहनें नहीं मिले।

विवेकवर्मा ने दूसरी जाली चिट्ठी को भी पढ़कर राजा से यों कहा–"महाराज! इस चिट्ठी में थोड़ी-बहुत सचाई है। आज संध्या के समय दो पुरुष और एक स्त्री मेरे घर आये। उन लोगों ने कहा कि वे यात्री हैं, सराय में ठहरे हुए हैं। वहाँ पर चोरों का डर है, इसलिए उनका धन और गहने मैं छिपा रखूं, यह कहकर मेरे हाथ दे गये। लेकिन थोड़ी देर बाद एक पुरुष और एक स्त्री आ पहुँचे, यह कहकर अपने धन व गहने ले गये कि वे उसी वक़्त लौट रहे हैं।

विवेकवर्मा ये बातें बता ही रहा था, तभी राजा के सिपाही एक पुरुष और एक स्त्री को पकड़ लाये और बोले–"महाराज, ये दोनों भारी मात्रा में धन व गहने उठाकर भाग जा रहे थे, हमें संदेह हुआ, हमने इन्हें पकड़कर पूछा तो इन लोगों ने बताया कि ये सुरेन्द्रवर्मा के अनुचर हैं, विवेकवर्मा को किसी भी हालत में उनके पद से हटाने के लिए, राजा के क्रोध का शिकार बनाने के ख्याल से हमने यह नाटक रचा है। लेकिन विवेकवर्मा के घर धन व गहने सुरक्षित रखने के लिए देने के बाद इनके मन में यह कुबुद्धि पैदा हो गई कि सुरेन्द्रवर्मा को दगा देकर वह धन व गहने हड़प ले।"

इसके बाद राजा ने सुरेन्द्रवर्मा तथा उसके अनुचरों को कठोर दण्ड सुनाया और विवेकवर्मा को ऊंचे पद पर रखा।

इस घटना को देख पार्वती देवी धर्मदेवता की प्रशंसा करते हुए कैलास को लौटकर चली गईं।
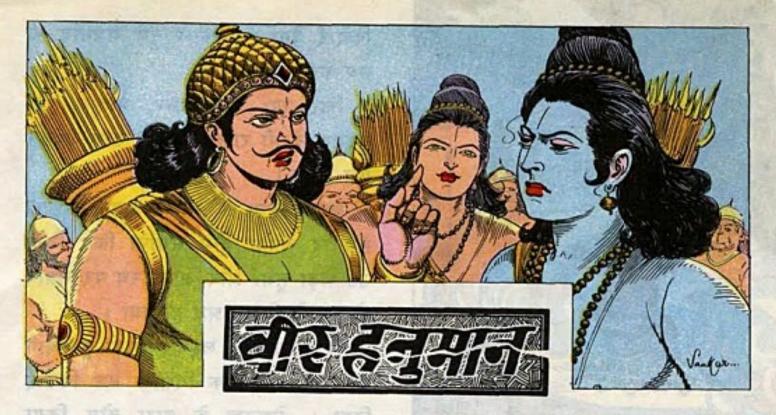
रामचन्द्रजी दुख में डूबे हुए थे, इसलिए विभीषण की बातें उनकी समझ में न आईं। थोड़ी देर बाद आश्वस्त हो उन्होंने पूछा—"विभीषण! तुमने मुझसे जो कुछ कहा, मेरी समझ में न आया, फिर से कहो।"

इस पर विभीषण ने यों कहा—"आप अकारण ही दुखी हो हमें भी दुख पहुँचा रहे हैं। आपके शत्रु ही प्रसन्न हैं। यदि आप राक्षसों का वध करके सीताजी को फिर से प्राप्त करना चाहते हैं तो युद्ध कीजिए। लक्ष्मण को आप आदेश दीजिये कि वानर सेना की सहायता लेकर वे निकुंभिळ जाकर मेघनाद से युद्ध करे और उसे मार डाले। मेघनाद होम करने के लिए इस वक़्त निकुंभिळ गया हुआ है। यदि उसने वह होम समाप्त किया तो हम सबकी मौत निश्चित है। ऐसा वर उसे ब्रह्मा से प्राप्त हुआ है। मेघनाद उसके हाथ से मारा जाएगा जो उसके होम में विघ्न पैदा करेगा। यदि मेघनाद का वध हुआ तो समझ लीजिये कि रावण और उसके मित्र मरे हुए लोगों के समान हैं।"

इस पर रामचन्द्रजी ने लक्ष्मण को आदेश दिया कि मेघनाद का वध करे। इसके बाद यह निश्चय हुआ कि लक्ष्मण वानर तथा भल्लूक सेना को साथ ले मेघनाद पर हमला करे और निकुंभिळ का रास्ता दिखाने के लिए विभीषण उनके

साथ जावे। लक्ष्मण के साथ वीर हनुमान भी चल पड़ा।

युद्ध के लिए रवाना होते समय लक्ष्मण ने सोने से अलंकृत धनुष, बाण तथा कवच धारण किये। विभीषण ने भी उत्तम धनुष धारण किया। जब वे निकुंभिळ की ओर चल पड़े तब उन्हें दूर पर व्यूह में खड़ी राक्षस सेना साफ़ दिखाई दी।

विभीषण ने लक्ष्मण को राक्षस सेना को दिखाकर कहा—"मेघनाद का होम पूरा होने के पहले ही वानरसेना को चाहिए कि राक्षस सेना का संहार करे। तुम इस व्यूह को तोड़ दो। तब तुम्हें मेघनाद दिखाई देगा। तत्काल तुम मेघनाद का वध कर डालो।"

फिर क्या था, वानर, भल्लूक तथा लक्ष्मण ने भी राक्षस सेना के साथ भयंकर युद्ध किया।

अपनी सेना के भीतर हाहाकार देख मेघनाद अपना होम समाप्त किये बिना उठ खड़ा हुआ और अपने रथ पर सवार हो युद्ध के लिए सन्नद्ध हो गया।

विभीषण तथा लक्ष्मण थोड़ी दूर आगे बढ़े, तब उन्हें एक विशाल वन दिखाई दिया। मेघनाद के द्वारा होम किया जानेवाला प्रदेश वहीं पर था। वहाँ पर एक काला तथा भयंकर वृक्ष था। मेघनाथ वहीं पर बलि देकर युद्ध करने निकलेगा, फिर वह अदृश्य रहकर युद्ध करेगा।

यह बात विभीषण के द्वारा जानकर लक्ष्मण युद्ध के लिए तैयार हो उस महा वृक्ष के समीप में खड़ा हो गया। इतने में युद्ध के लिए सन्नद्ध हो रथ पर मेघनाद उस वृक्ष के निकट आया।

"मैं तुम्हें युद्ध के लिए निमंत्रण दे रहा हूँ, मेरे साथ युद्ध करो।" लक्ष्मण ने मेघनाद को ललकारा।

मेघनाद ने लक्ष्मण की बातें सुनीं, उसके साथ विभीषण को देख वह क्रोध में आया और बोला—"विभीषण, तुमने राक्षस

होकर भी अपने वंश की प्रतिष्ठा को कैसे भुला दिया? यह तो तुम्हारा जन्म स्थान है। तुम मेरे पिताजी के सगे भाई हो। मेरे साथ द्रोह करने के लिए कैसे तैयार हो गये? तुम अधर्मी तथा दुष्ट हो! तुम्हें बंधु-बांधव, स्नेह, देश तथा खून के रिश्ते का थोड़ा भी ख्याल नहीं रहा। तुम अपने सगे-संबंधियों को त्याग शत्रु के दास बने हुए हो! रिश्तेदार तुम्हें देख रो पड़ेंगे। उत्तम गुणवाले तुम्हारी निंदा करेंगे। सुम यह भी नहीं जानते कि अपने बंधुओं के बीच प्रतिष्ठापूर्वक जीने तथा शत्रु के बीच हीन बनकर रहने में अंतर क्या है? मेरे बंधु होकर भी तुमने मेरा होम भग्न करके मेरा अपकार करने के लिए यह षड़यंत्र रचा है! ऐसा नीच कार्य कोई दूसरा व्यक्ति न कर सकेगा!"

इसके उत्तर में विभीषण ने यों कहा—"क्या तुस मेरी प्रकृति को नहीं जानते? मैं अधर्म को देख सहन नहीं कर सकता। बरना क्या मैं अपने भाई को त्याग सकता था? तुम्हारे पिता के अन्दर सभी प्रकार के दुर्गुण हैं। शीघ्र ही लंका के सभी राक्षस तुम्हारे पिता के साथ नाश को प्राप्त होनेवाले हैं। तुम्हारी भी मौत निकट आ गई है। मेरी जो कुछ निंदा करना चाहते हो, करो। मृत्यु को प्राप्त होनेवाले तुम्हें गालियाँ सुनाऊँ तो फ़ायदा ही क्या होगा! तुमने माया सीता का वध करके श्रीरामचन्द्रजी तथा लक्ष्मण का
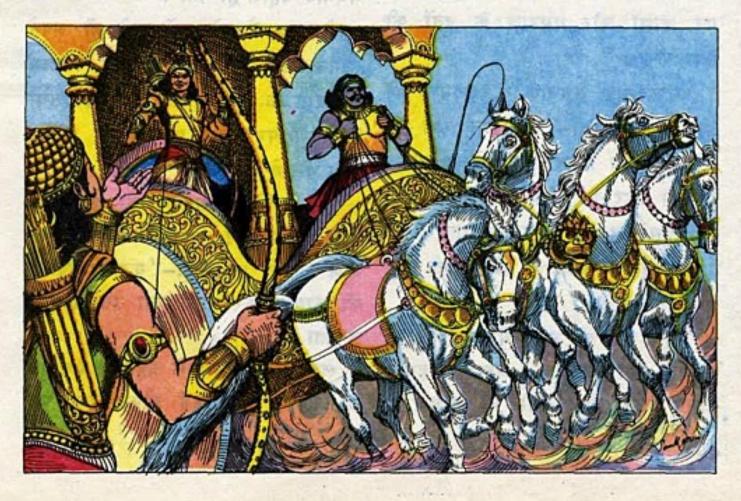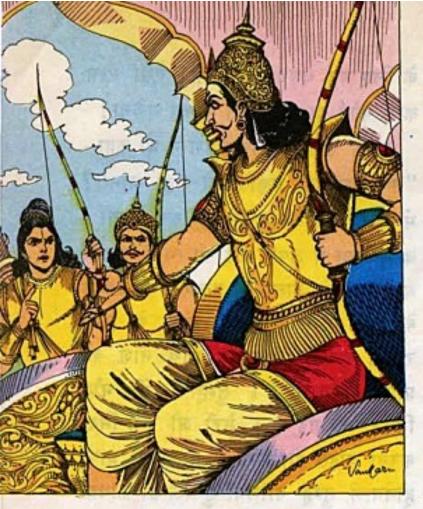
अपमान किया है। अब तुम जीवित नहीं रह सकते। लक्ष्मण के साथ युद्ध करके मर जाओ और यमराज के दूतों की सेवा करो।"

इसके बाद मेघनाद ने लक्ष्मण की ओर देखकर कहा–"उस दिन रात को मेरे बाणों के प्रहारों का परिचय पाकर भी तुम फिर मेरे साथ युद्ध करने आये हो? इससे यह साफ़ मालूम होता है कि या तो तुम भुलक्कड़ हो या तुम्हारी आयु चुक गई है!"

"तुम चोर की भाँति युद्ध करके अपने को बड़ा वीर मानते हो? अब तुम हमारे सामने आये हो, किसी भी हालत में तुम बच नहीं सकते! अपनी वीरता का परिचय दो!" लक्ष्मण ने ललकारा!

मेघनाद ने तत्काल लक्ष्मण पर बाण चलाकर उसके शरीर को रक्तमय बनाया। लक्ष्मण ने भी मेघनाद पर बाण चलाये। दोनों ने समानता के साथ युद्ध किया।

थोड़ी देर की लड़ाई के बाद मेघनाद के चेहरे पर विभीषण को भय का भाव दिखाई दिया। उसने लक्ष्मण से कहा–"लगता है, कि मेघनाद थक गया है। उसका वध करने के लिए यही अच्छा मौक़ा है!"

लक्ष्मण ने इस बार और तीक्ष्ण बाणों का मेघनाद पर प्रयोग किया। इस बार मेघनाद बेहोश हो गया।

मेघनाद ने होश में आते ही अपने सामने लक्ष्मण को देखा। अपने पराक्रम की बात के स्मरण आते ही लक्ष्मण तथा विभीषण पर पहले की अपेक्षा अधिक बाण चलाये।

उन बाणों ने लक्ष्मण को थोड़ी भी पीड़ा न पहुँचाई। उसने मेघनाद पर बाण चलाते हुए कहा–"युद्ध में विजय की कामना करनेवाला क्या ऐसे ही बाण चलाता है?"

लक्ष्मण के बाणों के प्रहार से मेघनाद का कवच टुकड़े-टुकड़े होकर रथ पर
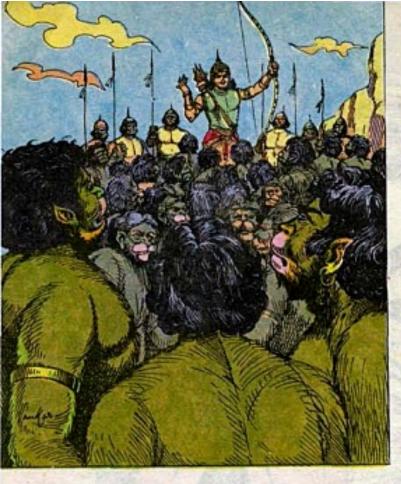
गिर पड़ा। उसकी देह पूर्ण रूप से क्षत-विक्षत हो गई।

मेघनाद ने क्रुद्ध होकर अपने बाणों के द्वारा लक्ष्मण के कवच को तोड़ डाला। इस प्रकार दोनों ने बड़ी देर तक तीव्र युद्ध किया। दोनों ने विजय की कामना से युद्ध किया, ऐसा युद्ध तभी रुक सकता है कि जब कि दोनों में से कोई एक मौत को प्राप्त हो जाता है!

उस युद्ध को देखने पर विभीषण ने भी अपने चारों मंत्रियों को मिलाकर शत्रु से युद्ध करना चाहा। तब वानरों से यों कहा—"वानर वीरो! अब रावण को इस एक मेघनाद का ही सहारा है! इसकी तुम लोग क्यों उपेक्षा करते हो! तुम लोगों ने अब तक अनेक राक्षस वीरों का संहार किया है, ऐसी हालत में यह अकेले मेघनाद किस खेत की मूली है? इसका भी वध कर डालोगे तो रावण अनाथ हो जाएगा। मैं ही इसका वध कर डालता, मगर यह रिश्ते में मेरा पुत्र लगता है। मेरे द्वारा उसका संहार करना गलत होगा! पहले तुम लोग मेघनाद की मदद करने वाली सेना का संहार कर दो।"

ये बातें सुनने पर वानरों ने अपनी पूँछें हिलाईं, सिंहनाद करके राक्षस सेना पर टूट पड़े। विभीषण तथा उसके मंत्रियों ने भी राक्षस सेना के साथ युद्ध प्रारंभ किया।

इस बीच लक्ष्मण ने मेघनाद के रथ-सारथी के सर को अपने बाण से काट डाला। इस पर मेघनाद ने अपने रथ का संचालन स्वयं करते हुए युद्ध किया। देखने में यह कार्य अद्भुत ज़रूर था, पर उसे तंग करने के लिए लक्ष्मण को अच्छा मौक़ा मिल गया। फिर क्या था, मेघनाद का अहंकार जाता रहा। उसके मुख मण्डल पर यह परिवर्तन देख वानर अत्यंत प्रसन्न हुए।

उसी समय प्रमाथी, शरभ, रभस तथा गंधमादन नामक चार वानर वीर मेघनाद

के रथ में जुते चार घोड़ों पर अचानक टूट पड़े। वानर वीरों के प्रहारों से ख़ून उगलते वे घोड़े मर गये।

तब मेघनाद रथ से उतर पड़ा, लक्ष्मण पर बाणों का प्रहार करते आगे बढ़ा। उसके चारों तरफ़ राक्षस वीर फैले हुए थे। मेघनाद ने उन लोगों को आदेश दिया—"तुम लोग युद्ध को चालू रखो। मैं तुम लोगों की ओट में नगर में जाऊँगा और दूसरे रथ पर सवार हो लौट आऊँगा।"

मेघनाद ने अपनी योजना के अनुसार लंका में जाकर बढ़िया रथ तैयार कराया। उस पर सवार हो पुनः युद्ध भूमि को लौट आया। उसे अचानक रथ पर प्रत्यक्ष हुए देख लक्ष्मण और विभीषण भी विस्मय में आ गये।

इस बार मेघनाद ने अपने बाणों के द्वारा वानर सेना को अपार क्षति पहुँचाई। इसे देख लक्ष्मण ने मेघनाद के धनुष को तोड़ डाला। इसके बाद उसके सारथी का वध किया। फिर भी मेघनाद ने युद्ध जारी रखा और विभीषण को अपने बाणों के द्वारा बुरी तरह से आहत किया। विभीषण ने क्रुद्ध होकर अपने गदा से मेघनाद के रथ के घोड़ों का संहार किया।
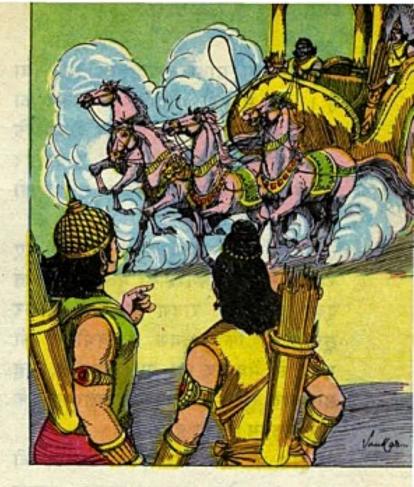
इसके बाद मेघनाद तथा लक्ष्मण ने परस्पर दिव्य अस्त्रों का प्रयोग किया। अंत में लक्ष्मण के इंद्रास्त्र ने मेघनाद के सर को काट डाला।

इस दृश्य को देख विभीषण और वानरों ने सिंहनाद किये। वानर विजय के दर्प में आकर राक्षसों का संहार करने लगे। इस पर वे अमित शोक में आकर लंका में भाग गये।

मेघनाद की मृत्यु पर प्रसन्न हो वानरों ने लक्ष्मण की प्रशंसा की। लक्ष्मण रामचन्द्रजी के निकट जाकर प्रणाम करके खड़ा हो गया। रामचन्द्रजी ने उसका आलिंगन करके कहा—"मेघनाद की मृत्यु

से रावण का मानो दाया हाथ कट गया है। अब मैं बड़ी आसानी से रावण का संहार कर सकता हूँ।" इन शब्दों के साथ रामचन्द्रजी ने लक्ष्मण के घावों पर मरहम पट्टी करने के लिए सुषेण को नियुक्त किया।

मेघनाद के साथ युद्धभूमि में आये हुए राक्षस सैनिक मेघनाद की मृत्यु पर अत्यंत दुखी हुए और रावण के पास जाकर सूचना दी कि लक्ष्मण ने विभीषण की मदद से मेघनाद का वध किया है, यह समाचार सुनते ही रावण अतिशय दुख के मारे एकदम बेहोश हो गया।

होश में आने पर रावण मेघनाद की मृत्यु पर शोक मनाता रहा। उसका पुत्र-शोक क्रमशः क्रोध में परिवर्तित होने लगा। उसके मन में यहाँ तक ख्याल आया कि इसके प्रतीकार के रूप में सीताजी का वध कर देना चाहिए। उसने अपने सामने स्थित राक्षसों से कहा–"मेरे पुत्र ने वानरों के समक्ष माया सीता का वध करके दिखाया। मैं असली सीता का संहार कर दूँगा। रामचन्द्रजी पर से अपने मन को न बदलनेवाली सीता का वध कर बैठूँगा।" यों कहकर म्यान से रावण ने तलवार निकाली और अशोक वन में स्थित सीताजी के पास चल पड़ा।

यह समाचार जानकर मंदोदरी तथा रावण के मंत्रियों ने उसे ऐसा करने से रोका।

मंदोदरी ने रावण को समझाया–"अब भी सही, देर नहीं हुई है। आप सीताजी को रामचन्द्रजी के हाथ सौंपकर लंका को सर्वनाश होने से बचाइए।"

रावण के मंत्रियों ने सलाह दी–"यही क्रोध आप रामचन्द्र पर दिखाइए। सीताजी का वध करके आप आखिर क्या प्राप्त कर सकते हैं?"

रावण ने आखिर जान लिया कि उसका कर्तव्य रामचन्द्रजी का वध करना है, सीता का वध करना नहीं, तब उसने अत्यंत भयंकर लंकायाग प्रारंभ किया।

भरत की आज़ादी के हेतु अनेक भारतीयों ने अपने प्राणों की बलि दी। ऐसे महान वीरों में बाघ जतीन एक हैं। इनका जन्म १८७९ में बंगाल के एक गाँव में हुआ था।

'बाघ' का अर्थ शार्दूल होता है। यह उपाधि इन्हें कैसे प्राप्त हुई? इसके पीछे एक कहानी है। एक दिन सवेरे एक बाघ ने जतीन के ही गाँव में उन पर हमला किया, जतीन ने उसे एक छोटे से चाकू से मार डाला। बाघ ने बुरी तरह से उन्हें घायल किया, फिर भी डाक्टरों के कथनानुसार वे अपने 'आत्मबल' के कारण जीवित रह सकें।
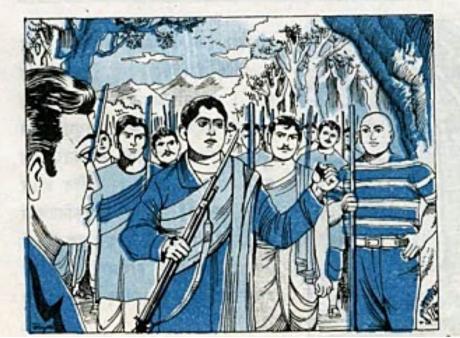
जतीन का काम बाघ का वध करने से समाप्त नहीं हुआ। उन्हें सिंह के साथ–अपने मातृ देश पर शासन करनेवाले ब्रिटीशों के साथ–लड़ना पड़ा। स्वामी विवेकानंद तथा श्री अरविंद की राष्ट्रीय भावनाओं से उत्तेजित हो उन्होंने विदेशी शासकों के प्रति विद्रोह करने के लिए गुप्त रूप से युवकों को संगठित किया।
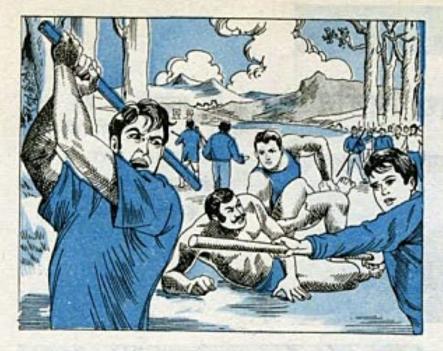
जतीन ने उन युवकों को लाठी चलाना, कसरत तथा बंदूक़ चलाना सिखाया। उन युवकों ने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने आप को आत्मार्पित किया। उनके गुप्त कार्यों से परिचित हो सरकार ने उनके नेता जतीन को गिरफ़्तार किया।

ब्रिटीश सरकार ने जतीन को डराया, सताया, मगर उन्होंने कोई भी रहस्य प्रकट नहीं किया। तब उन्हें जमीन-जायदाद, धन और सुख का प्रलोभन दिखाया गया। इस पर क्रुद्ध हो जतीन ने "मुँह बंद करो" चिल्लाते हुए मेज़ पर दे मारा। मेज टूट गई।

आख़िर उन पर कोई इलजाम लगा न पाये, इसलिए उन्हें रिहा किया गया। उन्होंने अपने अनुयायिकों को विद्रोह करने के लिए आयुध लाने यूरोप भेजा। जर्मनी ने मदद देने का आश्वासन दिया। जतीन अपने तीन अनुचरों के साथ कटिटपड़ा जाकर बालासोर के निकट एक पुराने बंदरगाह के पास हथियार लानेवाले जर्मन जहाज़ का इंतजार करने लगे।

भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई के वास्ते हथियार लानेवाले जर्मन जहाज़ का दो ब्रिटीश जहाज़ों ने पीछा किया। दुश्मन के हाथ फँसने के पहले जर्मन जहाज़ ने सभी हथियारों को समुद्र में गिरा दिया। जतीन ने यह समाचार सुनते ही कहा था– "इसका मतलब है कि हमें विदेशी सहायता पर निर्भर नहीं रहना चाहिए।"
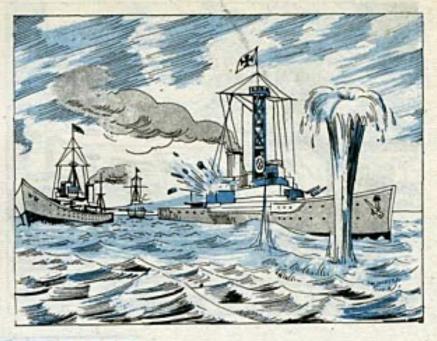
जतीन अपने आगे के कार्यक्रम का निर्णय कर न पाये थे, इस बीच कलकत्ते के गुप्तचरों ने उनके गुप्त प्रदेश का पता लगाया। पुलिस जिस दिन जतीन तथा उनके अनुचरों को बन्दी बनानेवाली थी, उस दिन बारिश हो रही थी, फिर भी जतीन और उनके अनुचर साहस के साथ बचकर निकल गये।

पुलिस ने असफल होकर चिल्लाना शुरू किया–भयंकर लुटेरे भागते जा रहे हैं। उन्हें पकड़नेवालों को भारी इनाम दिया जाएगा। लेकिन वे चारों युवक छिपते, रेंगते, मनुष्यों से बचते बुधबलंग नदी तक पहुँचे।

वहाँ के गाँववालों ने उन्हें देख लुटेरे समझा और चिल्लाना शुरू किया। फिर भी वे युवक अपनी हिम्मत हारे बिना बंदूक, बारूद, कारतूस आदि को उठाये नदी पार कर गये।

पुलिस तथा सैनिक भी जब वहाँ पहुँचे, तब एक मिट्टी के टीले पर बांबियों के पीछे से लड़ने को तैयार हो गये। अनेक घंटों तक लड़ाई होती रही। उन चारों युवकों की गोलियों से कई दर्जन सिपाही मारे गये। खून से लतपथ होकर भी उन युवकों ने हथियार नहीं फेंके। अंतिम कारतूस के चुकने तक लड़ते रहें।

अंत में जतीन पकड़े गये। मगर उसी रात को उनका देहांत हुआ। उन्होंने अपने को बंदी बनानेवालों से कहा–"आप लोग मेरे अनुचरों को दण्ड न दीजिए। जो कुछ हुआ, उसका पूरा जिम्मेवार मैं हूँ।" इस पर पुलिस कमिश्नर चार्ल्स टिगार्ट ने जतीन की प्रशंसा करते हुए कहा था–"समस्त भारतीयों में महान वीर को मैंने देखा है।"

कहानी शीर्षक-प्रतियोगिता

कहानी का सुंदर शीर्षक देकर रु. २५ जीतिए !

?

किचियोम नामक एक जापान के गृहस्थ ने अपनी पत्नी को पुकारकर कहा–"हमारे बरामदे में एक खूंटा बाहर निकल आया है। इससे ख़तरा पैदा हो सकता है। इसे ठोकना होगा। पड़ोसी घर में जाकर एक हथौड़ी ले आओ।"

वह गृहिणी पड़ोसी घर जाकर खाली हाथ लौट आई और बोली–"मैंने पड़ोसी घर में जाकर पूछा कि खूंटे को ठोकने के लिए हथौड़ी दे दो, पर उन लोगों ने पूछा–"वह कैसा खूंटा है? बांस का है? लकड़ी का है या लोहे का?" मैंने लोहे का खूंटा बताया। इस पर उन लोगों ने कहा–"तब तो क्या हमारी हथौड़ी ख़राब न होगी? हम नहीं देंगे।"

इस पर किचियोम मुंह बनाकर खीझ भरे स्वर में बोला–"सचमुच इस दुनियां में कैसे कमबख़्त कंजूस होते हैं! अच्छी बात है! हम कर ही क्या सकते हैं? लाचार हैं। हमारी हथौड़ी ही ले आओ।"

* * *

उपर्युक्त कहानी के लिए बढ़िया शीर्षक कार्ड पर लिखकर, निम्न लिखित पते पर भेजें–"कहानी शीर्षक-प्रतियोगिता", चन्दामामा २ & ३, आर्काट रोड़, मद्रास - ६०००२६

कार्ड हमें मार्च १० तक प्राप्त हों और उसमें फोटो-परिचयोक्तियाँ न हों। इसके परिणाम चन्दामामा के मई '७७ के अंक में घोषित किये जायेंगे।

जनवरी मास की प्रतियोगिता का परिणाम : "हजामत महंगी पड़ी"

पुरस्कृत व्यक्ति : **श्री जगदीश प्रसाद लाटा, सरदार शहर (चुरू) राजस्थान - ३३१४०३**

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां मई १९७७ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

A. S. Anbukkarasu

★

A. S. Anbukkarasu

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।

★ मार्च १० तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।

★ दोनों परिचयोक्तियां कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

जनवरी के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो: **मछली फंस गई कांटे में!**

द्वितीय फोटो: **कांटा फंस गया उंगली में!!**

प्रेषक: **रामरतन सान, भैरवदत्त लेन, टी. टी. इन्स्टिट्यूट, पो. सलकिया, जि. हवड़ा**

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras 600 026 : Controlling Editor : NAGI REDDI

याद कीजिए —
अपनी जिन्दगी के खुशियों
भरे दिन! --- जब लोग कहा
करते थे कि आप जैसी खूबसूरत
दुल्हन उन्होंने पहले कभी नहीं देखी.
अगले हफ़्ते आपकी बेटी की शादी होने वाली है.
क्यों न आप इन यादों को अपने अलबम में संजो
कर रख लें---? क्लिक III की खिंची हुई तस्वीरों से.

मूल्य :
रु. ७०.२५
उत्पादन कर सहित,
स्थानीय कर
अतिरिक्त

क्लिक III

निशाना साधिये — तस्वीर खींचिये

AGI
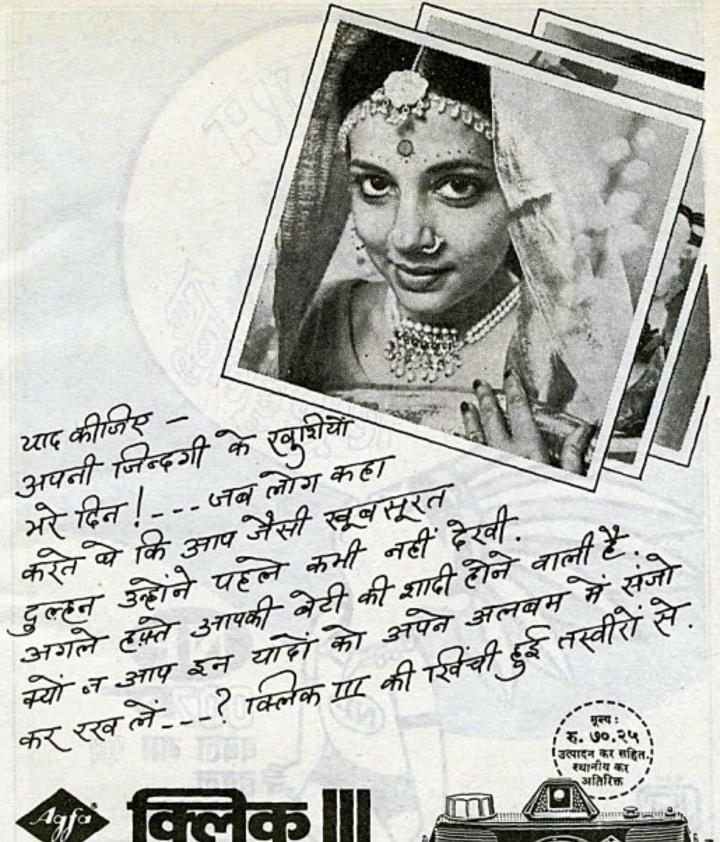
वितरक :
आगफ़ा-गेवर्ट इंडिया लिमिटेड
मर्चेंट चैंबर्स, ४१ न्यू मरीन लाइन्स, बम्बई ४०० ०२०
शाखाएं : बम्बई • नई दिल्ली • कलकत्ता • मद्रास
© फोटोग्राफी संबंधी उत्पादनों के निर्माता आगफ़ा-गेवर्ट, ऍन्टवर्प/लीवरकुसेन का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क

निर्माता : **न्यू इंडिया इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड**, बड़ौदा • बम्बई

SIMOES/AG/17/75/HN

बबल गम
के भरपूर बुलबुले
BUBBLE GUM
NP
NP
007
बबल गम एवं
डबल
बबल गम
बबल गम चबाओ
चाहे जितने बुलबुले बनाओ...
सर्व प्रथम बनानेवालों की ओरसे
हमेशा सर्वोत्तम
IS:6747
ISI
दि. नॅशनल प्रॉडक्टस्
बंगलोर ५६० ००६

CHANDAMAMA (Hindi) MARCH 1977 Regd. No. M. 5452

मित्र-संप्राप्ति